पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या–एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2020-2022

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२४, अंकः-५, नवम्बर, सन्-२०२१, सं०-२०७७वि०, दयानंदाब्द १९७, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,१२१; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

आर्य समाज टाण्डा अम्बेडकरनगर का १३०वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज टाण्डा ने रचा नया कीर्तिमान

मीना आर्या धर्मार्थ न्यास द्वारा सात वेद महारथियों को मिला 'वेदश्री' सम्मान

स्वामी प्रणवानन्द, स्वामी आर्यवेश, आचार्या प्रियंवदा वेदभारती, डॉ.परमेश्वर नाथ मिश्र, वेदप्रकाश श्रोत्रिय, डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री, पं.दीनानाथ शास्त्री सम्मानित

सम्मानित विद्वत्जन तथा मीना आर्या धर्मार्थ न्यास के पदधिकारी गण

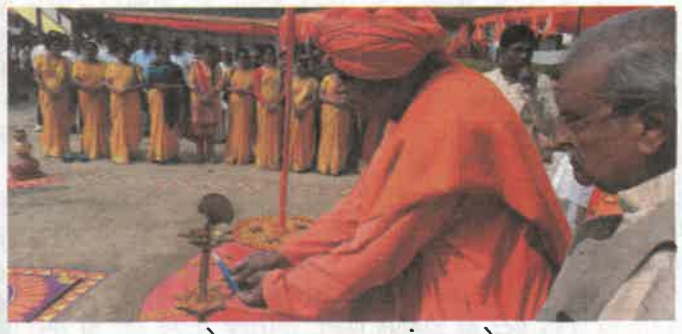

समारोह का उद्घाटन एवं ध्वजारोहण

दिनांक १० नवम्बर २०२१ को आर्य समाज टाण्डा, अम्बेडकर नगर के १३०वें वार्षिकोत्सव के सायंकालीन सत्र में 'श्रीमती मीना आर्या धर्मार्थ न्यास' टाण्डा के तत्वावधान में विद्वत् सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता माननीय न्यायमूर्ति श्रीयुत् सज्जन सिंह कोठारी जी ने की, मुख्य अतिथि के रूप में श्री दीनदयाल गुप्त (चेयरमैन-डॉलर इंडस्ट्रीज, कोलकाता) शोभायमान रहे। इस भव्य व दिव्य विद्वत् सम्मान समारोह में सात विद्वत्जनों का सम्मान किया गया तथा 'वेदश्री' की उपाधि से विभूषित किया गया।

श्रीमद्दयानन्द न्यास के प्राचार्य, देश भर में आठ गुरुकुलों को संचालित करने वाले, आर्य ज्योति (संस्कृत व हिन्दी) पत्रिका के सम्पादक, बहुआयामी कृतित्व के धनी **श्रद्धेय स्वामी प्रणवानन्द जी**, उत्तर प्रदेश, हरियाणा व राजस्थान में शराबबंदी आन्दोलन में अग्रणी भूमिका निभाने वाले, अंग्रेजी हटाओं-रोजगार दिलाओ जैसे आंदोलनों का सफल नेतृत्व करने वाले, सती प्रथा के विरुद्ध व आतंकविरोधी आंदोलन के अग्रणी नेतृत्वकर्ता **स्वामी आर्यवेश जी**, गुरुकुल आर्य कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद की संस्थापिका, अनेक संस्कृत व हिन्दी पुस्तकों की लेखिका, कुशल संपादिका और देश के विभिन्न अंचलों में वैदिक धर्म का पूर्ण निष्ठा से प्रचार-प्रसार करने वाली विदुषी **आचार्या प्रियंवदा वेदभारती**, रामजन्मभूमि वाद में प्रमुख अधिवक्ता के रूप में न्याय दिलाने वाले, महर्षि दयानन्द के कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को महर्षि द्वारा मान्य द्वितीय संस्करण को अक्षुण्ण रखने हेतु अजमेर के न्यायालय से लंबित वाद की वकालत करने वाले, महर्षि दयानन्द भक्त प्रसिद्ध अधिवक्ता **डॉ.परमेश्वर नाथ मिश्र**, देश और विदेश में आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द की दुंदुभि बजाने वाले, आर्य जगत के गौरव, वैज्ञानिक विद्वान, **आचार्य श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय**, वैदिक धर्मोपदेशक, आर्य संस्कृति के समुपासक, सम्पादक, आर्य जगत के प्रख्यात लेखक, राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं को प्रकाशित कराने के महारथी, 'वैदिक पथ' मासिक पत्रिका के संपादक, धारा प्रवाह ओजस्वी वक्ता **डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री** तथा वैदिक शंकाओं के समाधानकर्ता, वैदिक संस्कार व कर्मकांड प्रक्रिया मर्मज्ञ, **पं.दीनानाथ शास्त्री जी** के सम्मान में सर्वप्रथम टीका लगाकर, पगड़ी पहनाकर, पट्रिटका व शाल से स्वागत के पश्चात् क्रमशः प्रशस्ति पत्र प्रदान कर 'वेदश्री' उपाधि से अलंकृत कर सम्मानित किया गया। सभी सम्मानित विद्वत्जनों को सुन्दर मेडल प्रदान करके प्रत्येक को ५१-५१ हजार रुपये की धनराशि भीा प्रदान की गयी।

विनय पीयूष

एक हों !

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।

(ऋग्वेद, 10/191/3)

एक हों विचार,
सभा समितियाँ समान सभी,
मन हों समान,
चित्त एक लक्ष्य वाले हों;

इसीलिए तुम्हें यूँ
समान सोच वाला करूँ,
खान-पान में भी एक
रुचि के निराले हों!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

कविवर प्रदीप की गीत-रचना 'आनन्दकंद ऋषि दयानन्द की हम गाथा गाते हैं, हम कथा सुनाते हैं'- बहुत दिनों से सुनता आ रहा हूँ। फिल्मी गायक कवि की सधी हुई संवेदनाशील स्वरलहरी, इस रचना की सुन्दर लय और पूरे साजबाज के साथ मन को मुग्ध कर देती है। अभी तक सुनता ही आ रहा हूँ, किन्तु समग्र रूप से इस काजलयी रचना को पढ़ने-समझने की की इच्छा लगातार बलवती रही है। आज अपनी कामना की पूर्ति मैं इस रचना को प्रकाशित करके कर रहा हूँ- यह मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप भी इस कविता-गीत को पढ़कर आनन्द विह्वल, भावविभोर हुए बगैर नहीं रह सकेंगे। इसके कुछ कारण हैं। यह गीत गीत न होकर इसमें महाकाव्य की विशेषताओं के दर्शन होते हैं। जिस तरह महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी जी की एक ही कविता 'राम की शक्तिपूजा' में महाकाव्य की आत्मा समाहित है, उसी तरह 'गाथा गाते हैं' कविता काव्य में भी महाकाव्य के लक्षणों का स्पंदन मौजूद है। जिस तरह महाप्राण पं.सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की 'राम की शक्तिपूजा' में श्रीराम की सम्पूर्ण जीवनगाथा समाहित है, उसी तरह ऋषि दयानन्द की जन्म से लेकर निर्वाण पर्यन्त समग्र जीवन यात्रा इस कविता में चित्रित है। ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध में कवि की दृष्टि इतनी साफ और स्पष्ट है तथा उन विशेषताओं का भी चित्रण किया है जिसको अक्सर लोग नजर अन्दाज कर जाते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के जीवन पर असंख्य कविताएँ तथा कतिपय खण्डकाव्य एवं महाकाव्य रचे गये किन्तु कविवर प्रदीप जी की यह रचना अपने आप में विशिष्ट है। इसमें सम्मोहन, संवेदनशीलता और प्रामाणिकता का सम्मिलन हुआ है। आजतक की सभी महर्षि पर रचित कविताओं में यह सर्वोपरि है, सर्वोत्तम है। जब जब मैं इस कविता को सुनता हूँ, तो यह अनुभव करता रहा हूँ कि इसमें अद्‌भुत आकर्षण है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् एक राष्ट्रीय एकता पर आधारित फिल्म 'जागृति' में 'आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं झाँकी हिन्दुस्तान की' कविता को आज भी लोग भुला नहीं पाते हैं। 'जागृति' के चार गीत फिल्मों के इतिहास में गौरवपूर्ण हैं, जिन्होंने प्रदीप जी के कारण अपार ख्याति अर्जित की। वे स्वयं एक कवि थे तथा गायक भी। वे एक राष्ट्रवादी कवि थे और उनकी रचना- 'ऐ मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में भर लो पानी' को स्वरसाम्राज्ञी लता मंगेशकर ने जब तत्कालीन प्रधानमंत्री पं.जवाहरलाल नेहरू के समक्ष गाया तो वास्तव में लोगों की आँखों में पानी था और स्वयं नेहरू जी भी अपने आँसुओं को रोक नहीं पाये। ऐसे कवि ने महर्षि के जीवन पर जो कविता लिखी वह कवि अमर है, धन्य है, उसका कवि होना सार्थक है। लगभग ७५ वर्ष पूर्व स्व.विजय भट्‌ट की लोकप्रिय फिल्म 'रामराज्य' में एक गीत श्री राम के पुत्र लव कुश गाते हैं- 'भारत की एक सन्नारी की हम कथा सुनाते हैं', उसी लोकप्रिय कर्णप्रिय धुन पर आधारित है प्रदीप जी की यह रचना-'आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की हम गाथा गाते हैं, हम कथा सुनाते हैं'। कवि ने स्वयं अपने श्रीकंठ से इस कविता को गाकर स्वयं को धन्य कर लिया और भारतवासियों को, आर्यों को भी कृतार्थ कर दिया क्योंकि इस कविता में महर्षि के जीवन का यथार्थ और निर्भीक चित्रण है। देखने में कविता 'ऋषि गाथा' दुखान्त है क्योंकि ऋषि निर्वाण को प्राप्त हो जाते हैं किन्तु कवि ने अपनी काव्य प्रतिभा से इसे सुखान्त बना दिया है। कवि प्रदीप कविता के अन्त में अमर पंक्तियों की रचना करते हैं, जो बेजोड़ हैं, प्रत्येक आर्य को इन पंक्तियों को कण्ठस्थ कर लेना चाहिए-

क्या बर्मा क्या मॉरिशस क्या सूरिनाम क्या फीजी।
इन सब देशों में विद्यमान हैं आज भी स्वामी जी।
केनिया गुआना त्रिनिदाद सिंगापुर युगाण्डा।
उड़ रहा सब जगह बड़ी शान से आर्यों का झंडा।
हर आर्य समाज में आज भी स्वामी जी मुस्काते हैं।

वर्णन में कवि ने कहीं भी संकोच नही किया। स्वामी जी के जीवन की जिन बातों को लोग छिपा जाते हैं या स्पष्ट कहने में उन्हें कठिनाई या भय की अनुभूति होती है- कवि प्रदीप ने उन स्थलों को साफगोई के साथ गीत के सांचे में ढाला है। शिवलिंग पर चूहे के चढ़ने की बात को कहने में कविगण संकुचित हो जाते हैं मगर प्रदीप जी ने बड़ी सफाई के साथ लिखा है-

जिस घड़ी चढ़े शिव के सिर पर चूहे चोरी-चोरी।
मूलजी ने समझी तुरंत मूर्तिपूजा की कमजोरी।

इसी तरह काशी शास्त्रार्थ प्रकरण में आर्यजन भी सत्य छिपाते देखे गये। तथाकथित एक आर्य-फिल्मकार ने काशी शास्त्रार्थ को अनिर्णय की दशा तक कह डाला। किन्तु कविवर प्रदीप ने बड़े साफ तौर पर कई छन्दों में काशी शास्त्रार्थ का पूरा विवरण दिया और स्पष्ट घोषणा की-

इतिहास बताता है उस दिन काशी की हार हुई।
हर एक दिशा में ऋषिराजा की जय-जयकार हुई।

नारी सशक्तीकरण के सम्बन्ध में कवि की मार्मिक वाणी सुनते ही बनती है-

उन दिनों बोलती थी घर-घर में मर्दों की तूती।
हर पुरुष समझता था औरत को पैरों की जूती।
ऋषि ने जुल्मों से छुड़वाया अबला बेचारी को।
जगदम्बा के सिंहासन पर बैठा दिया नारी को।

यह कविता इसलिए और भी महत्वपूर्ण है कि इसमें सत्य भी है, शिव भी है और सुन्दरम् का समन्वय हुआ है। भावों में 'सत्यम्' शैली में 'शिवम्' और भाषा में है 'सुन्दरम्'।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-२११

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में दशम समुल्लास का अंश

भक्ष्याभक्ष्य

देखो! जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे, तभी आर्य्यावर्त्त वा अन्य भूगोल देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणि वर्त्तते थे। क्योंकि दूध, घी, बैल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्य रस पुष्कल प्राप्त होते थे। जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आके गो आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है। क्योंकि-

नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम्।

जब वृक्ष का मूल ही काट दिया जाय तो फल फूल कहां से हों?

(प्रश्न) जो सभी अहिंसक हो जायें तो व्याघ्रादि पशु इतने बढ़ जायें कि सब गाय आदि पशुओं को मार खायें तुम्हारा पुरुषार्थ ही व्यर्थ हो जाय?

(उत्तर) यह राजपुरुषों का काम है कि जो हानिकारक पशु वा मनुष्य हों उनको दण्ड देवें और प्राण भी वियुक्त कर दें।

(प्रश्न) फिर क्या उनका मांस फेंक दें?

(उत्तर) चाहें फेंक दें, चाहें कुत्ते आदि मांसाहारी को खिला देवें वा जला देवें अथवा कोई मांसाहारी खावे तो भी संसार की कुछ हानि नहीं होती किन्तु उस मनुष्य का स्वभाव मांसाहारी होकर हिंसक हो सकता है।

जितना हिंसा और चोरी विश्वासघात छल, कपट आदि से पदार्थों को प्राप्त होकर भोग करना है वह अभक्ष्य और अहिंसा धर्मादि कर्मों से प्राप्त होकर भोजनादि करना भक्ष्य है। जिन पदार्थों से स्वस्थ्य रोगनाशक बुद्धिबलपराक्रम वृद्धि और आयुवृद्धि होवे उन तण्डुलादि,

गोधूम, फल, मूल, कन्द, दूध, घी, मिष्टादि पदार्थों का सेवन यथायोग्य पाक मेल करके यथोचित समय पर मिताहार भोजन करना सब भक्ष्य कहाता है। जितने पदार्थ अपनी प्रकृति से विरुद्ध विकार करने वाले हैं जिस-जिस के लिये जो-जो पदार्थ वैद्यकशास्त्र में वर्जित किये हैं, उन-उन का सर्वथा त्याग करना और जो-जो जिसके लिये विहित हैं उन-उन पदार्थों का ग्रहण करना यह भी भक्ष्य है।

(प्रश्न) एक साथ खाने में कुछ दोष है वा नहीं?

(उत्तर) दोष है। क्योंकि एक के साथ दूसरे का स्वभाव और प्रकृति नहीं मिलती। जैसे कुष्ठी आदि के साथ खाने से अच्छे मनुष्य का भी रुधिर बिगड़ जाता है वैसे दूसरे के साथ खाने में भी कुछ बिगाड़ ही होता है; सुधार नहीं। इसीलिये-

नोच्छिष्टं कस्यचिद्दद्यान्नाद्याच्चैव तथान्तरा। न चैवात्यशनं कुर्य्यान्न चोच्छिष्टः क्वचिद् व्रजेत्।। मनु.।।

न किसी को अपना जूँठा पदार्थ दे और न किसी के भोजन के बीच आप खावे। न अधिक भोजन करे और न भोजन किये पश्चात् हाथ मुख धोये बिना कहीं इधर-उधर जाय।

(प्रश्न) 'गुरोरुच्छिष्टभोजनम्' इस वाक्य का क्या अर्थ होगा?

(उत्तर) इसका यह अर्थ है कि गुरु के भोजन किये पश्चात् जो पृथक् अन्न शुद्ध स्थित है उसका भोजन करना अर्थात् गुरु को प्रथम भोजन कराके पश्चात् शिष्य को भोजन करना चाहिये।

(प्रश्न) जो उच्छिष्टमात्र का निषेध है तो मक्खियों को उच्छिष्ट सहत, बछड़े का उच्छिष्ट दूध और एक ग्रास खाने के पश्चात् अपना भी उच्छिष्ट होता है; पुनः उनको भी न खाना चाहिये।

(उत्तर) सहत कथनमात्र ही उच्छिष्ट होता है परन्तु वह बहुत सी औषधियों का सार ग्राह्य; बछड़ा मां के बाहिर का दूध पीता है भीतर के दूध को नहीं पी सकता इसलिये उच्छिष्ट नहीं। *(क्रमशः)*

वेदांजलि

प्रार्थना कैसी हो

❑पं.शिव कुमार शास्त्री, भू.पू.संसद सदस्य

प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत्।
प्र शर्धाय प्र यज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्ट्ये धुनिव्रताय शवसे।।

(साम० : 462)

शब्दार्थ-

(एवयामरुत्) हे ज्ञानप्रापक वेदों के जाननेवाले मनुष्य! **(महे)** बड़ाई के लिए **(मरुत्वते विष्णवे)** ऋत्विजोंवाले यज्ञ के लिए **(प्र)** उत्तम **(शर्धाय)** बल के लिए **(प्रयज्यवे)** जिससे यज्ञ करते हैं उसके लिए **(सुखादये)** सुखपूर्वक भोग के लिए **(तवसे)** स्फूर्ति के लिए **(भन्ददिष्ट्ये)** कल्याण सुख-संगति के लिए **(धुनिव्रताय)** चलने-फिरने के काम के लिए **(शवसे)** मानस बल के लिए **(गिरिजाः)** तुम्हारी प्रार्थना-वाणियों में उत्पन्न हुई **(मतयः)** बुद्धियाँ **(वः)** तुम्हें **(प्रयन्तु)** उच्च भाव से प्राप्त हों।

व्याख्या-

मंत्र में भक्तों द्वारा भिन्न-भिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए की जानेवाली प्रार्थनाओं का दिग्दर्शन कराकर यह उपदेश दिया गया है- **'गिरिजा मतयः वः यन्तु'**- तुम्हारी प्रार्थना- वाणियों में उत्पन्न होने वाली बुद्धियाँ, तुम्हें उच्चभाव से प्राप्त हों, अर्थात् क्षुद्रभाव से केवल अपने सुख और समृद्धि के लिए प्रभु से प्रार्थना मत करो, अपितु उसका क्षेत्र मनुष्यमात्र और प्राणिमात्र तक विस्तृत होना चाहिए।

मन्त्र में पहली प्रार्थना भक्त को महान् बनाने की है। क्षुद्राशय केवल अपने सुख और कल्याण की बात सोचता है, किन्तु ज्यों-ज्यों उसके विचारों में महत्ता और विशालता आती जाती है, उसकी आत्मीयता का क्षेत्र विस्तृत होता जाता है। फिर अपनी सीमा को लांघकर परिवार, सम्बन्धी और पड़ोसियों तक की बात को सोचता है और सात्त्विकता बढ़ने पर सारी बस्ती, उससे आगे मण्डल, प्रान्त और बढ़ते-बढ़ते **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** पर पहुंच जाता है।

ऋत्विजों के साथ मिलकर प्रजा की सुख-समृद्धि के लिए यज्ञ-सम्पादन करने की क्षमता मांगो! यज्ञ शब्द यज् धातु, जिसके अर्थ व्याकरणशास्त्र में देवपूजा, संगतिकरण और दान हैं, से निष्पन्न हुआ है। एक प्रकार से उत्तम समाज के निर्माण के लिए इससे अधिक उपादेय और व्यावहारिक प्रस्ताव नहीं हो सकता। जो समाज में देव हैं, दिव्यगुण, ज्ञान, बल और ऐश्वर्य आदि से विभूषित हैं, अर्थात् बड़े हैं, उनकी पूजा करो, वे सम्मान के पात्र हैं। उनका आशीर्वाद लो। ऋत्विजों के साथ मिलकर यज्ञ करने का अभिप्राय है सर्वप्रथम बड़ों का आदर।

यज् धातु का दूसरा अर्थ है 'संगतिकरण'- बराबरवालों के साथ हृदय में मान और स्वार्थ की गांठ न रखकर उदारतापूर्वक मिलकर चलने की कला सीखो! हृदय में अहं और स्वार्थ की गांठ हो तो सामाजिक संघटन का यज्ञ कभी सफल नहीं हो सकता! यह हुआ यज्ञ का दूसरा अंग।

यज् धातु का तीसरा अर्थ है-दान। जो अपने से ज्ञान, बल और धन में न्यून हैं, उन्हें उदारता से मार्गदर्शन की आवश्यकता है तो वह दो, बिना मांगे।

लक्ष्मी चंचला है, आज तक किसी की नहीं रही। हाँ, ऐश्वर्य के आने पर यदि आपने सुपात्रों की सहायता कर दी, तो आपने अजर और अमर यश अर्जित कर लिया तथा अग्रिम जन्म के लिए अपना भोग भी जमा कर लिया।

समाज में ऐसे शुभ कार्यों के विस्तार के लिए प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए। मन्त्र की शेष प्रार्थनाओं में से अधिकांश का समावेश इन्हीं में हो गया है। यही प्रार्थनाओं का विशुद्ध रूप है।

प्रार्थना के शब्द नपे-तुले और अपनी योग्यता-पुरुषार्थ से अधूरे रहे कार्य की पूर्ति के लिए होने चाहिए। प्रभु हमारी सारी स्थिति से भली प्रकार परिचित है। उसके लिए विनीत भाव से कहे हुए दो शब्द भी पर्याप्त होंगे। वह उदार दाता हमारे कर्मों को देखकर बिना मांगे भी देता है। यदि प्रार्थना करने पर भी नहीं मिलता तो कमी हमारी पात्रता की है। इस सम्बन्ध में बहुत सुन्दर लिखा है किसी शायर ने-

तेरे करम में कमी कुछ नहीं करीम है तू।
कुसूर मेरा है, झूटा उम्मीदवार हूँ मैं।।

आर्य समाज के बाहर तथाकथित धार्मिक क्षेत्र में तो प्रार्थना के नाम पर अन्धेरगर्दी मची हुई है। पौराणिक भाइयों में बुद्धि से विचारने का कोई काम नहीं है। झूम-झूम के गाते हैं- जय गणेश जय गणेश देवा, माता तेरी पार्वती पिता महादेवा। विचारें कि आप प्रार्थना कर रहे हैं या वंशावलि का वर्णन? ऐसी ही अनेक प्रार्थनाएं शंकर के विषय में भक्त लोग गाते हैं। 'हरे कृष्ण हरे राम, राम-राम हरे-हरे' की तो संसार में आंधी ही आ रही है। वस्तुतः ईश्वर और धर्म के विषय में लोग बुद्धि से सोचने की आवश्यकता ही नहीं समझते। कितनी दयनीय स्थिति है।

('श्रुति सौरभ' से साभार)

दयानन्द चरितामृतम्

&MkW-xkskn Ùkkek Z&

(द्वितीयः सर्गः)

छन्द १३-१५

दृष्ट्वा शोकाकुलान् सर्वान्
कौटुम्बिकजनान् भृशम्।
खेदेन स्तब्धतां यातः
संशको जीवनं प्रति।।

सारे कौटुम्बिक जनों को अत्यधिक शोकाकुल देखकर वह खेद से स्तब्धता को प्राप्त हो गया और उसके मन में जीवन के प्रति ही शंका पैदा हो गई।

संसारासारता तेन,
धिक्कृता मनसा मुहुः।
सिद्धार्थो हि यथाऽऽलोक्य,
नयन्तं मृतकं जनैः।।

उसने अपने मन से बार-बार संसार की असारता को धिक्कारा। जैसे कि सिद्धार्थ ने लोगों द्वारा मृतक को ले जाते हुए देखकर (संसार की असारता को धिक्कारा था)

सुकुमारमतिर्वीक्ष्य,
पितृव्यनिधनं पुनः।
वैराग्यभावनाविष्टो,
बभूव कार्षणिस्तदा।।

वह कोमल मति वाला कर्षणजी का पुत्र (मूलशंकर) पुनः अपने चाचा के निधन को देखकर वैराग्य की भावना से ग्रस्त हो गया।

('दयानन्द चरितामृतम्' से साभार, क्रमशः)
-साहिबाबाद, गाजियाबाद-२०१००५

सत्संग
जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा :

जब समिधाएँ तीन हैं तो उनके मन्त्र भी तीन होने चाहिएँ। समिधाएँ तीन और मन्त्र चार ऐसा क्यों है?

-प्रेमचन्द्र शर्मा, 15, बहादुरपुर, लखनऊ

समाधान :

घी में डुबोई हुई तीन समिधाओं को अग्नि में रखते समय जो मन्त्र बोले जाते हैं उन्हें सामिधेनी ऋचाएँ, अर्थात् सामिधेनी मन्त्र कहते हैं। एक आरण्यक के आचार्य कहते हैं कि विश्वब्रह्माण्ड में चलनेवाले इस ईश्वरीय यज्ञ की पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौ--ये तीन समिधाएँ हैं। पृथिवी नामक पहली समिधा के लिए अग्नि- सामिधेनी ऋचा है। अन्तरिक्ष नामक समिधा के लिए वायु और विद्युत्- ये दो सामिधेनी ऋचाएँ हैं। द्यौ नामक तीसरी समिधा के लिए आदित्य- सामिधेनी ऋचा है।

यह भी ध्यान रहे कि विश्वब्रह्माण्ड में जो ईश्वरीय यज्ञ चल रहा है, हमारा यह यज्ञ उसकी अनुकृति मात्र है, इसलिए विश्वब्रह्माण्ड में चलनेवाले ईश्वरीय यज्ञ की तीन समिधाएँ और चार सामिधेनी ऋचाएँ हैं, ठीक इसी प्रकार से हमारे यज्ञ में भी तीन समिधाएँ और इनके लिए चार सामिधेनी ऋचाएँ (मन्त्र) हैं।

जिज्ञासा :

यज्ञ में 'अयन्त इध्म आत्मा...' (आश्वलायनगृ.सू.-1.10.12) इस मन्त्र से पाँच आहुतियाँ क्यों दी जाती हैं?

-श्रीशरत्न पाण्डेय, वसन्त कुंज, आई.आई.एम.रोड, लखनऊ

समाधान :

शतपथब्राह्मण 3.1.4.5 में औदुग्रभण होम की पाँच आहुतियाँ देने का कारण बताते हुए लिखा है कि--

संवत्सरसम्मितो वै यज्ञः। पंच वा ऋतव संवत्सरस्य।।
तं पंचभिराप्नोति तस्मात् पंच जुहोति।।

अर्थात् यजमान पाँच आहुतियाँ देता है, क्योंकि यज्ञ और संवत्सर की समानता है। हेमन्त शिशिर के अथवा शिशिर वसन्त के समास-एकीकरण से संवत्सर में पाँच ही ऋतु होती हैं। इस होम से पाँच ऋतुओं के संघातरूप संवत्सर की प्राप्ति होती है, इसलिए पाँच आहुतियाँ दी जाती हैं। यह भाव है कि जहाँ-जहाँ भी पाँच आहुतियाँ दी जाती हैं, सर्वत्र निदान एक-सा ही है।

यजमान कामना करता है कि मेरा यह यज्ञ पाँच ऋतुओंवाले संवत्सर में निरन्तर चलता रहे, कहीं विच्छिन्न न हो। इसी संवत्सर-रूप प्रयोजन के लिए ये पाँच आहुतियाँ दी जाती हैं।

इन पाँच आहुतियों से यजमान प्रजा, पशु, ब्रह्मवर्चस् और अन्नाद्य- उत्तमोत्तम भोज्य सामग्री इन चार पदार्थों से अपनी समृद्धि की उस जातवेदा से प्रार्थना करता है, अर्थात् मूल्य अथवा सन्तुलन की दृष्टि से एक-एक पदार्थ के लिए सवा-सवा आहुति देता है। इस प्रकार चार पदार्थों से समृद्धि होने के लिए पाँच आहुतियों से यह शिक्षा भी मिलती है कि संसार में समृद्धि के लिए न्यूनतम सवाया मूल्य चुकाना पड़ता है--सवाया परिश्रम करना पड़ता है, सवाई सम्पत्ति लगानी पड़ती है। इसके बाद मनोवांछित समृद्धि के दर्शन होंगे।

पाँक्तत्व की प्राप्ति और समृद्धि के लिए कड़ा परिश्रम करने की शिक्षा ही इन पाँच आहुतियों का मूल उद्देश्य है।

-स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती, शंका समाधान' से

स्मृति-वातायन

चतुर्थ पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

आचार्य श्री ज्ञानेश्वरार्य

-सेवक राम आर्य-

आचार्य श्री का जन्म २७ सितम्बर, १९४६ को राजस्थान प्रान्त के बीकानेर जिले के कस्बा नागौर में हुआ था। आपके पिताजी का नाम श्री द्वारका दास तथा माताजी का नाम श्रीमती सूरज देवी था। उस काल की पारिवारिक रीति-रिवाजों के अनुसार आपका जन्म अपनी ननिहाल में हुआ था। आर्थिक स्थिति तथा प्रसव के समय उपयुक्त चिकित्सा के अभाव में आपके जन्म के बाद में शीघ्र ही आपकी माताजी का निधन हो गया था। यद्यपि आपका परिवार जन्मना ब्राह्मण था, परन्तु विगत कुछ पीढ़ियों से स्वर्ण का व्यवसाय होने से वैश्य के रूप में परिवार की ख्याति थी। परिवार आर्थिक रूप से अत्यधिक सम्पन्न था। बचपन में आपका पालन दादी मुरली देवी जी ने बड़े लाड़ प्यार से किया था। परिवार में दानशीलता की परम्परा होने से उसका प्रभाव आपके जीवन में अन्त समय तक परिलक्षित होता रहा।

प्रारम्भिक शिक्षा के बाद आपने रामदास कालेज से बी.काम. करने के बाद एम. काम. में प्रवेश लिया। अध्ययन के साथ ही साथ आप पैतृक व्यवसाय में संलग्न हो गये तथा बाहर आना जाना भी करने लगे। आप अपने व्यवसाय को और अधिक अच्छी प्रकार से आधुनिक ढंग से करना चाहते थे। इस हेतु आपने आभूषण निर्माण की एक आधुनिक मशीन की माँग पिता से की। उस समय उस मशीन की कीमत लगभग एक लाख रुपये थी। मशीन न मिलने की स्थिति में आपने पिताजी से कहा था कि मैं घर-बार छोड़ दूँगा। पिताजी ने मशीन दिलाने में असमर्थता जतायी तथा आपके पूर्व जन्मों के संस्कारों के उदय होने, विद्वानों के संग, सांसारिक जीवन के प्रति असंतोष के भाव जाग्रत होने से आप आध्यात्मिक दिशा की ओर मुड़ गये। १६ मार्च, १९७४ को आप एक कमण्डल, दो कम्बल, दो सौ रुपये मित्र से उधार लेकर सर्वस्व त्याग कर अध्यात्म की राह पर चल दिये। २४ मार्च, १९७४ को आप पूज्य आचार्य बलदेव जी की शरण में गुरुकुल कालवा पहुँचे। वहाँ साढ़े छः वर्षों तक आपने अत्यन्त तपस्यापूर्वक घोर परिश्रम करके ऋषियों की सूक्ष्म विद्या को आत्मसात् करने का प्रयास किया। आपका गुरुकुलीय जीवन ब्रह्मचारियों के लिए अत्यंत प्रेरणा दायक व अनुकरणीय रहा।

गुरुकुल कालवा जाने से पहले ही आपको पूज्य स्वामी सत्यपति जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ, जिनकी सद्प्रेरणा से आप गुरुकुल कालवा पहुँचे थे। गुरुकुल वास के मध्य में ही आप प्रतिवर्ष एक मास के लिए पूज्य स्वामी सत्यपति जी से योग विद्या सीखने जाया करते थे। व्याकरण का अध्ययन पूर्ण करके आपने ज्वालापुर में गुरुकुल काँगड़ी के उप कुलपति प्रो.रामप्रसाद वेदालंकार जी से निरुक्त का अध्ययन किया।

पूज्य स्वामी सत्यपति जी की विशेष प्रेरणा पर आप उच्च स्तर के योगाभ्यास तथा दर्शनों के अध्ययन हेतु १९८६ में आर्यवन, रोजड़, गुजरात में आयोजित 'दर्शन योग प्रशिक्षण शिविर' में सम्मिलित हुए। यह शिविर लगभग ढाई वर्ष तक चला। इसके उपरान्त ही 'दर्शन योग महाविद्यालय' की स्थापना स्वामी सत्यपति जी ने की, जिसका दायित्व आचार्य ज्ञानेश्वरार्य तथा श्री विवेक भूषण (वर्तमान स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक) को सौंपा। अपने २५ वर्ष के आचार्यत्व काल में लगभग ६० से भी अधिक आदर्श आचरण युक्त युवा दार्शनिक विद्वान तैयार किये। आप जिस क्षेत्र में उतरे उसमें सफल हुए, सफलता मानो आपकी अनुगामिनी बन गयी।

आपने बहुआयामी कार्य किये जिनका दिग्दर्शन निम्नवत है-

(१) वानप्रस्थ आश्रम, रोजड़ की स्थापना, ५० से अधिक कुटिया, विशाल भूगर्भ ध्यान कक्ष, सभाकक्ष, भोजनालय का निर्माण, अनेक शिविरों का आयोजन।

(२) हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी भाषा में विपुल साहित्य का प्रकाशन एवं वितरण।

(३) अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र, जिसमें जड़ी बूटियों, यज्ञपात्रों की प्रदर्शनी, वीडियो थियेटर, यज्ञशाला, यज्ञ प्रशिक्षण व्यवस्था का संचालन, मार्च २०१६ को १२ घंटे का अनवरत चलने वाला अग्निहोत्र।

(४) विदेश प्रचार हेतु लगभग २८ देशों की यात्राएं।

(५) विश्व कल्याण धर्मार्थ न्यास, वैदिक आध्यात्मिक न्यास का गठन एवं संचालन।

(६) विचार टी.वी.के प्रेरणादाता एवं मार्गदर्शक।

(७) आश्रम के द्वार पर एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, फिजियोथेरेपी सुविधा से युक्त 'महात्मा सत्यानन्द मुंजाल चिकित्सालय की स्थाना।

(८) ब्रह्मचारियों, विद्वानों, गुरुकुलों को सहयोग, निर्धन विद्यार्थियों को सहयोग, व्याकरण अध्ययन हेतु विद्यालय की स्थापना।

(९) गोशालाओं को सहयोग, पक्षीघर की स्थापना, उपासक सम्मेलन, याज्ञिक परिवार सम्मेलन, प्रान्तीय सार्वदेशिक सभा के कार्यक्रमों का वानप्रस्थ आश्रम परिसर में संचालन।

आपके जीवन में अनेक विशेषताएं थीं, जिनमें से कुछ का संकेत मात्र कर रहे हैं-

(१) दृढ़संकल्पी- आपने जो भी संकल्प लिया, उसे पूरा किया।

(२) अत्यन्त पुरुषार्थी- आपमें आलस्य प्रमाद का लेश भी न था, अत्यंत श्रमशील

(३) सहनशीलता- विपरीत परिस्थिति में भी आप सहज ही रहते थे।

(४) गुरुभक्ति- अपने गुरुओं के प्रति आप हमेशा आदर, स्नेह से पूर्ण रहे।

(५) दानशीलता- यह गुण आपमें विशिष्ट था, जो भी आपके पास आया वह इस गुण से अवश्य ही प्रभावित हुआ।

(६) कुशल प्रबंधक- आपके प्रबन्धन की विशेषता थी कि आप प्रत्येक कार्य को समय पर, उचित रीति से, उत्तमता से, परिणाम प्रभाव पर विचार करके करते थे।

(७) क्रान्तिकारी ओजस्वी प्रवक्ता- आप द्वारा दार्शनिक, राष्ट्रीय भावनाओं से प्रेरित प्रवचन श्रोताओं पर विशेष प्रभाव डालने वाले होते थे।

पूज्य आचार्य श्री से मेरा अनेक बार मिलना हुआ। अजमेर, ऋषि उद्यान में आयोजित होने वाले शिविरों (ध्यान योग), विद्वत् गोष्ठियों, ध्यान प्रशिक्षण प्रशिक्षण शिविर, ऋषि मेला आदि अनेक अवसरों पर आपसे चर्चा होती रही। आप अद्भुत व्यक्तित्व के धनी थे। रोजड़ में आयोजित क्रियात्मक योग प्रशिक्षण में भी आपका सान्निध्य प्राप्त हुआ। आपके १२ घंटे प्रतिदिन चलने वाले यज्ञ के बारे में स्मृतिशेष डॉ.धर्मवीर जी को कुछ आपत्तियाँ थीं। जब आप २०१७ में अजमेर पधारे तो डा.धर्मवीर जी ने प्रातः यज्ञोपरान्त प्रवचन के लिए आमंत्रित करके अनुरोध किया कि मेरी यज्ञ के विषय में जो आपत्तियाँ हैं उनको समावेशित करते हुए अपने प्रवचन को रखें। आचार्यश्री ने कुछ बातों को समावेशित करते हुए कहा कि जो लोग स्वयं यज्ञ नहीं कर सकते हैं, वे यज्ञ हेतु धन की व्यवस्था करें, मैं उनके यज्ञ को करूंगा, जितना धन वे व्यय करेंगे उसका लाभ उनको मिलेगा। इस स्पष्टीकरण के बाद भी आगामी परोपकारी पत्रिका के अंक में डा.धर्मवीर जी ने अपनी स्पष्टवादिता का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए आचार्यश्री की बातों का खण्डन करते हुए 'यज्ञवेदी पर पाखण्ड के पाँव' शीर्षक लेख से अपनी बात को छाप दिया। प्रभु की व्यवस्था के अनुसार अब दोनों ही विद्वान् अपने भौतिक शरीर को छोड़ चुके हैं।

संयोग का वियोग अवश्यम्भावी है, यह ईश्वरीय नियम है, जिसे हमें स्वीकारना पड़ता ही है। अन्ततः वह दुःखद घड़ी भी आ गई जब आचार्यश्री की आत्मा १४ नवम्बर २०१७ को रात्रि लगभग १२.३० बजे अगली यात्रा पर प्रस्थान कर गयी। मैं आचार्यश्री को हृदय के अन्तरतम से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

-त्रिवेणी नगर, लखनऊ

शुभाकांक्षा

आर्य लोक वार्ता का अक्टूबर २०२१ अंक प्राप्त हुआ। ब्रजभाषा के प्रसिद्ध छंदकार ब्रजेश जी के महात्मा गांधी पर लिखे छंद ने मन मोह लिया। हमारे जैसे नौसिखिए के लिए एक दिग्दर्शक स्तंभ है वह छंद जिसमें गांधी शब्द की अनुप्रासंगिता प्राप्त करने के लिए विलक्षण शब्द सामर्थ्य का प्रदर्शन हुआ है। दिनकर जी ओज के कवि हैं। अहिंसा के पुजारी गांधी जी पर क्या लिखा जा सकता है जो कि ओज और वीर रस से परिपूर्ण भी हो, यह उस लम्बी कविता में द्रष्टव्य है। कैलाश निगम जी तो मेरे प्रिय कवि हैं। उनका छंद और कंठ अतिप्रभाव उत्पादक है जिन्होंने उन्हें मंच पर कविता पाठ करते सुना है, वे मेरी बात से अवश्य सहमत होंगे। अंक में उनका छंद चार चांद लगा रहा है। 'चिर-विराम'- यह कविता वयोवृद्ध आर्य ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी जी की स्वर्गवासी पत्नी पर लिखी गई है जो मन पर उनकी अनुकृति उकेरने में सफल है। अंक में महात्मा आनंद स्वामी जी का धारावाहिक लेख प्रकाशित हुआ है। औरंगजेब के बड़े भाई दाराशिकोह एवं उसकी बहन जेबुन्निसा का जिक्र महात्मा जी ने प्रसंग वश किया है। लेख से लेखक के फारसी उर्दू एवं संस्कृत साहित्य के एकाधिकार का मंडन होता है। डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार जी की मैं पत्र के माध्यम से नियमित पाठक रहा हूँ। कर्म फल का सिद्धान्त अत्यंत कठिन है। महर्षि वाल्मीकि, पतंजलि आदि ऋषियों ने भी यही लिखा है कि ठीक ठीक कर्म फल को समझ पाना केवल ईश्वर के वश में है। किन्तु डा.साहब का एक वाक्य बहुत कुछ कह गया-'कर्म चक्र चलाने में आध्यात्मिक अर्थात् शरीर से नहीं अपितु मन तथा आत्मा से संबन्ध रखने वाले कारण हैं...। अंत में मैं पत्र के सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश की अनंत ऊर्जा एवं प्रतिभा का कायल हुए बिना नहीं रह पाता जिन्होंने इस अवस्था में भी पत्र निकालने जैसा पवित्र एवं महती कार्य कुशलता पूर्वक सम्पादित कर रखा है।

-श्रीशरत्न पाण्डेय
बसंतकुंज, आई.आई.एम. रोड, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता का अक्टूबर अंक मिला, यह अंक बहुत अच्छा, ज्ञानवर्द्धक व पठनीय है। पं.शिवकुमार शास्त्री (पूर्व संसद सदस्य) द्वारा लिखित मुखपृष्ठ का लेख 'श्रीराम का जीवन राजनीतिक कुशलता और नैतिकता का स्वर्णिम उदाहरण है' बहुत ही उत्तम जानकारी से युक्त अनेक संस्कृत श्लोकों से सज्जित गुण-गरिमा से मंडित है। इस लेख के माध्यम से मुझे एक नई जानकारी हुई, कि रामादल के लंका में प्रवेश करते ही सुबेल पर्वत पर चढ़कर सुग्रीव ने रावण को घूमते हुए देखा और वे उससे युद्ध करने पहुँच जाते हैं तथा उसे अपना पौरुष दिखा कर वापस आ जाते हैं। सुग्रीव के वापस आने पर राम उन्हें समझाते हैं। यहाँ भगवान राम के द्वारा व्यक्त उद्गारों में कितना प्रगाढ़ मैत्री भाव का सन्देश है ऐसा ज्ञान प्रदायक लेख प्रकाशित करने के लिए आर्य लोक वार्ता मासिक धन्यवाद का पात्र है। 'अक्षर लोक' के स्तम्भकार श्री अमृत खरे जी वास्तव में अच्छे समीक्षाकार हैं उनके द्वारा इस बार 'शान्तिधर्मी' के

'ऋषि बोधांक' की विस्तार से की गयी समीक्षा भी अच्छी है। 'शुभाकांक्षा' में श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' जी ने अपने पत्र के माध्यम से मुझे 'साहित्य भूषण' मिलने पर बधाई दी है, मैं उनका हृदय से आभारी हूँ और चाहता हूँ कि अगली बार उन्हें भी यह सम्मान प्राप्त हो, वे हमारे विभागीय अधिकारी रहे हैं। पृष्ठ ३ पर डॉ.वेद प्रकाश आर्य का लेख 'लघुकाया में विराट व्यक्तित्व डॉ. सत्य प्रकाश' भी अच्छा है और एक महान प्रतिभा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सम्यक बोध कराने वाला दर्पण है। डॉ.वेद प्रकाश आर्य जी आर्य लोक वार्ता के सम्पादक हैं, इस बार सम्पादकीय में उन्होंने एक ऐसी प्रतिभा का प्रतिबिम्ब अपनी लेखनी द्वारा निश्रृत साहित्य रूपी दर्पण में निखारा है जिसका उल्लेख मैं पहले ही कर चुका हूँ। श्री अमृत खरे जी जो कविरत्न भी हैं और समीक्षक भी। इस बार का सम्पादकीय केवल पठनीय ही नही अपितु संग्रहणीय भी है। 'काव्यायन' में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की कालजयी रचना 'तेरा आसन सबसे ऊँचा सबसे महान' जो गांधी जी के प्रति लिखी गई है, अच्छी है ही, श्रीमती रामा आर्य 'रमा' का गीत 'चिर विराम' भी अच्छा है। गांधी जी के प्रति राघवेन्द्र शर्मा त्रिपाठी 'ब्रजेश' का मत्तगयन्द सवैया और रूप घनाक्षरी छन्द भी अच्छे हैं। इसी के साथ डॉ. कैलाश निगम का मनहरण छन्द 'फहराइये' भी याद करने योग्य है। सुन्दर अंक हेतु सम्पादक जी को बहुत बहुत बधाई।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'
370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

***

आपके द्वारा प्रेषित आर्य लोक वार्ता

का अक्टूबर २०२१ अंक प्राप्त हुआ। आद्योपांत पढ़ने पर बहुत अच्छा लगा। सर्वप्रथम पं.शिव कुमार शास्त्री जी का लेख 'श्रीराम का जीवन राजनैतिक कुशलता और नैतिकता का स्वर्णिम उदाहरण है' बहुत सुंदर, प्रेरक व तथ्यपूर्ण है। मैं आदरणीय श्री अमृत खरे जी को नमन करता हूँ। वह सम्माननीय हैं, वेदमंत्रों का काव्यानुवाद बहुत सुन्दर व पूर्ण मौलिक है, यह और भी विस्मयकारी और सराहनीय है कि यह काव्यानुवाद २४ वर्षों से निरंतर पढ़ने को मिल रहा है। यह भी स्मरणीय है कि आर्य लोक वार्ता के प्रारम्भ में भी आदरणीय श्री अमृत खरे का विशेष योगदान रहा है। बिना विज्ञापन पत्र निकालना अत्यंत दुरूह है, वह भी धार्मिक। मैं सभी प्रबुद्ध जनों से समय-समय पर आर्थिक सहयोग का अनुरोध करता हूँ। सत्यार्थ प्रकाश का एक अंश लोगों में सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने की रुचि पैदा करता है। 'जिज्ञासा और समाधान' में इतनी विद्वता पूर्ण ढंग से आपने जो समाधान किया है, वह सराहनीय है। मै। आपका बारंबार नमन करता हूँ। 'होता सदस्य परिचय-६६' के संदर्भ में मेरा मत है कि मेरे अंदर जो न्यूनताएं हैं, उनके समक्ष सद्गुण बिलकुल नहीं है। मैं सतत दुर्गुणों को दूर करने का प्रयास करता हूँ, लेकिन मैं सफल नहीं हो पा रहा। ईश्वर से सदैव प्रार्थना करता हूँ कि मेरे सम्पूर्ण दुर्गुण व दुर्व्यसनों को दूर कर दीजिए। ईश्वर की मेरे ऊपर अपार दया है, मुझे दयालु ईश्वर से योग्यता व क्षमता से अधिक मिलता है। लेकिन जन्म जन्मान्तर का जो मैल जमा हुआ है, उसको दूर करने में समय लगेगा। जो थोड़े बहुत सद्गुण हैं उसका श्रेय मेरा नहीं है, मेरे पिताजी को है जिन्होंने मुझे बचपन में ही महर्षि स्वामी दयानन्द जी से मिलवा दिया, एवं स्वामी जी ने आर्य समाज के माध्यम से जीवन जीने की कला सिखा दी, जीवन के हर मोड़ पर मेरे प्रेरणास्रोत महर्षि स्वामी दयानन्द हैं।

मैं 'ऋषि बोधांक' चाहता हूँ, कैसे मिल सकती है? महात्मा आनन्द स्वामी द्वारा रचित हर पुस्तक बहुत अच्छी लगती है। गंभीर विषयों को सरल भाषा में समझाना उनकी विशेषता है। 'काव्यायन' में सभी रचनाएं बहुत अच्छी हैं। आर्य समाज राजाजीपुरम के द्वारा होने वाले कार्यक्रमों का मैं प्रशंसक हूँ। मैंने भी आर्य समाज सण्डीला में पितृपक्ष में योग्य वृद्ध जनों का सम्मान किया है। पूरी आर्य लोक वार्ता गागर में सागर है। कोई ऐसी रचना व लेख नहीं है जो अच्छ न हो, मैं इसकी उत्तरोत्त प्रगति का प्रबल समर्थक हूँ।

-डॉ.सत्यप्रकाश
आर्य समाज, सण्डीला, हरदोई

***

आर्य लोक वार्ता अक्टूबर २०२१

अंक समय से प्राप्त हुआ। यह अंक अत्यन्त प्रभावशाली एवं आकर्षक तथा चित्त को आल्हादित करने वाला है। प्रथम पृष्ठ पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी के महान चारित्रिक गुणों का वर्णन वाल्मीकि रामायण के माध्यम से विद्वान लेखक पं.शिवकुमार शास्त्री जी द्वारा किया गया है। शास्त्री जी महान और लोकप्रिय वक्ता तथा वेदों के विद्वान थे। उनके द्वारा लिपिबद्ध लेख का चित्ताकर्षक होना स्वाभाविक है। विनय पीयूष में वेदमंत्रों का काव्यानुवाद श्री अमृत खरे के काव्यकौशल और गीत रचना के नैपुण्य को प्रमाणित करता है। गौरवगरिमा का सम्पादकीय विस्तार करता है क्योंकि श्री अमृत खरे के व्यक्तित्व एवं काव्यत्व पर पहली बार अनुसंधान पूर्ण प्रकाश डाला गया है। आर्य समाज राजाजीपुरम के प्राण आचार्य आनन्द मनीषी के जन्मदिवस पर डॉ.वेद प्रकाश आर्य द्वारा रचित दोनों छंद अत्यन्त प्रभावपूर्ण हैं। समाचारों में श्रीमती निमिषा वाजपेयी के हुनर की जानकारी प्राप्त कर मैं विशेष हर्षित हूँ क्योंकि निमिषा को उनके बाल्यकाल से ही जानता हूँ। श्री पाल प्रवीण जी की महानता और उदारता के बारे में क्या कहूँ- वे जन्म दिवस इत्यादि अवसरों पर शुभकामनाओं द्वारा सभी को गौरवान्वित कर देते हैं। काव्यायन में राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर की रचना विशेष प्रभावपूर्ण है। इस श्रेष्ठ पत्र के प्रति मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

-आचार्य सत्यप्रकाश आर्य
आवास विकास कालोनी, बाराबंकी

***

अक्षर लोक

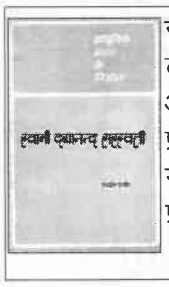

स्वामी दयानन्द सरस्वती (जीवनी)
लेखक : धनपति पाण्डेय
अनुवादक : राजीव चतुर्वेदी
प्रस्तुति : पेपर बैक/पृष्ठ संख्या 183
मूल्य : 26 रुपये
प्रकाशक : प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग ने एक पुस्तकमाला का प्रकाशन किया था जिसका उद्देश्य 'वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिये भारत के उन यशस्वी पुत्रों और पुत्रियों के जीवन संघर्षो और उपलब्धियों की कथा को लेखबद्ध करना था, जिन्होंने हमारे राष्ट्रीय जागरण और स्वतंत्रता की प्राप्ति में प्रमुख भाग लिया।' यह पुस्तकमाला थी 'आधुनिक भारत के निर्माता'। इसी क्रम में स्वामी दयानन्द सरस्वती की जीवनी लिखने का काम धनपति पाण्डेय को सौंपा गया था। इसे उन्होंने परिश्रम और लगन से पूर्ण किया और यह पुस्तक जुलाई 1992 में प्रकाशित हो गयी।

लेखक धनपित पाण्डेय के अनुसार स्वामी जी की जीवनी लिखने के लिये उन्होंने अनेक साधन-सूत्रों की सहायता ली जिनमें भारत सरकार की खुफिया विभाग की दैनिक, साप्ताहिक और मासिक रिपोर्टें, गोपनीय और गुप्त सरकारी आलेख, समसामयिक अखबार और पत्र-पत्रिकाएं तथा स्वामी जी के जीवन से सम्बन्धित कुछ कृतियां शामिल हैं। उन्होंने कुछ संस्मरणों और भाषणों का उपयोग भी किया है। लेखक को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में रीडर डॉ.के.सी.यादव, श्री जे.एफ.टी.जार्डेस, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में दयानन्द वैदिक चेयर के प्रोफेसर डॉ.भवानीलाल भारतीय तथा उस्मानपुरा (गुजरात) के श्री नरेन्द्र देव की पुस्तकों, लेखों और पत्रों से पर्याप्त मूल्यवान सामग्री प्राप्त हुई।

लेखक धनपति पाण्डेय का कथन है कि भारतीय पुनर्जागरण काल के महान नेताओं में स्वामी दयानन्द सरस्वती का अनूठा स्थान है। अपने समय में उन्होंने हजारों लोगों को प्रभावित किया और उनका वह प्रभाव आर्य समाज के जरिए आज भी अक्षुण्ण बना हुआ है।

भारत के इस महान सपूत ने करोड़ों भारतवासियों के मन पर छाए अज्ञान रूपी अंधकार को हटाने और अकर्मण्य पुरोहित वर्ग द्वारा सदियों के दौरान खड़े किये गये अंधविश्वास, मिथ्यावाद, धर्मान्धता को समाप्त करने के लिये सतत प्रयत्न किया। उन्होंने भारतीय समाज की वैज्ञानिक और तर्कसंगत आधार पर पुनर्रचना करके उसे राजनीतिक मुक्ति पाने योग्य बनाने का जो प्रयत्न किया, वह अत्यन्त सराहनीय है। उन्होंने भारतीय राष्ट्र और समाज का पुनर्निर्माण करने और देशभक्ति की भावना उत्पन्न करने के उद्देश्य से आर्य समाज की स्थापना की। मानव कल्याण के लिये अपना सर्वस्व त्याग देने वाला यह व्यक्ति निश्चय ही एक महान विभूति था।

'स्वामी दयानन्द सरस्वती' पुस्तक दस खण्डों में विभक्त है। यह हैं- परिचय, जन्म और बचपन, ज्ञान और सत्य की खोज में, एक महापुरुष का उदय, आर्य समाज की स्थापना, एक सच्चा धर्मयोद्धा, सामाजिक पुनर्निर्माण, दयानन्द और भारतीय राष्ट्रवाद, आर्य समाज के प्रति ब्रिटिश सरकार का रवैया और राष्ट्र निर्माता दयानन्द।

यूं तो स्वामी दयानन्द सरस्वती की जीवनी से सभी प्रबुद्ध जन परिचित ही होते हैं तथापि धनपति पाण्डेय की दृष्टि से उसे पुनः पढ़ना, गुनना तथा आत्मसात करना एक नया अनुभव प्रदान करता है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सहज, सरल, प्रवाहमयी और सरस होने के साथ-साथ भावानुगामिनी भी है जिससे पाठक उसे आद्योपान्त पढ़े बिना नहीं रह सकता।

पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट-1 में स्वामी जी के जीवन के घटनाक्रम को तारीखवार सूचीबद्ध किया गया है। परिशिष्ट-2 में 'कुछ प्रसिद्ध शास्त्रार्थों' की तिथि, स्थान और विरोधी पक्ष का लेखाजोखा प्रस्तुत किया गया है। परिशिष्ट-3 में स्वामी दयानन्द के वंशवृक्ष को दर्शाया गया है। पुस्तक का समापन अनेक 'श्रद्धांजलियों' से किया गया है, जिनमें रोमां रोलां, सी.एफ. एण्ड्रयूज, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, सुभाष चन्द्र बोस, डॉ.एनी बेसेंट, प्रो.सिडनी वेव, मैडम ब्लैवाट्स्की, कर्नल एच.एस.आलकाट, आर.एल.टर्नर, सर यदुनाथ सरकार और एच.एस.रहीमजादा सफानी की पंक्यिां मननीय हैं। श्रद्धांजलि देते हुए सर सैयद अहमद खां कहते हैं, स्वामी दयानन्द सरस्वती संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान और वेदों के मर्मज्ञ अध्येता थे...साथ ही वह अत्यन्त सौम्य और आध्यात्मिक प्रकृति के पुरुष थे। उनके शिष्य उन्हें ईश्वर के समान पूजते हैं और वह निश्चय ही इस सम्मान के अधिकारी थे।...मैं दिवंगत स्वामी दयानन्द सरस्वती से भलीभांति परिचित था और मैं उनके प्रति बहुत सम्मान व्यक्त करता था। वह इतने उत्तम और विद्वान व्यक्ति थे कि सभी धर्मो के लोगों को उनका सम्मान करना ही उचित और शोभनीय था। उनकी जोड़ का भारत में दूसरा महान व्यक्ति नहीं है।

कुल मिला कर पुस्तक पठनीय, मननीय और सर्वथा संग्रहणीय है। मुद्रण निर्दोष है। मूल्य अत्यन्त कम है। लेखक के साथ-साथ भारत सरकार का प्रकाशन विभाग भी बधाई का हकदार है।

धारावाहिक–21 कालजयी रचना

आर्य-संस्कृति के मूल तत्त्व

–डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार–

आखिर, असली कर्म तो 'क्रियमाण'-कर्म ही हैं। जिन कर्मों को हम 'संचित' कहते हैं वे भी तो किसी समय किये ही जा रहे थे-'क्रियमाण' ही थे। यह नहीं माना जा सकता कि हरेक कर्म किसी-न-किसी पिछले कर्म का परिणाम है। अगर ऐसा माना जाय तब तो शुरू-शुरू का सिर्फ एक कर्म रह जाता है। उस एक कर्म से-अगर किसी तरह हम अपने उस पहले जन्म को पकड़ पायें जो संभव नहीं है-यह सारा सिलसिला चल पड़ा-यह असंभव है। कर्मों की समस्या का हल तभी निकलता है जब हम यह मानें कि हरेक कर्म पिछले का परिणाम तो है, परन्तु उसमें इस जन्म का नयापन भी अवश्य है, अगर नयापन न होता, तो आगे-आगे के कर्मों के फलों में भेद क्यों होता? यह नयापन आत्मतत्त्व की अन्तर्निष्ठ स्वतंत्रता के कारण है, यह नयापन ही कर्म के सिद्धांत की अन्तरात्मा है। आत्मा की कर्म करने की इस स्वतंत्रता के आधार पर ही, बिल्कुल नया कर्म करने की, पिछले किसी कार्य-कारण के बंधन से न बंधे हुए कर्म करने की आत्म-तत्त्व की सामर्थ्य के सहारे ही आत्मा कर्मों के चक्र में से, विधि के विधान में से निकल सकता है, जन्म-जन्मान्तरों की माथे पर पड़ी लकीरों को मिटा सकता है।

कर्म-चक्र कट सकता है--

कर्म का चक्र कैसे चल पड़ता है, और यह चक्र कैसे कट भी जाता है, यह कुछ उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगा। हम बैठे एक लेख लिख रहे हैं, बड़ी तन्मयता के साथ, दत्त-चित्त होकर। इतने में पत्नी ने आकर पुकारा, चलो घूम आयें। हम झुंझला उठे, क्रोध में भर गये--इसलिय कि उसे इतना भी ख्याल नहीं कि ऐसे समय जब विचारों की धारा एक खास दिशा में बह रही है तब बीच में उस शृंखला को न तोड़े। हमने कहा, चुप रहो, काम करने दो। हमारे क्रोध को देखकर उसे क्रोध आया-क्योंकि मानसिक-उद्वेग छूत की बीमारी की तरह दूसरे के उद्वेग से वेग ग्रहण कर लेता है। क्रोध को देखकर क्रोध बढ़ता है, भय को देखकर भय बढ़ता है, काम को देखकर काम बढ़ता है, लालच को देखकर लालच बढ़ता है। उसने कहा, चुप कैसे रहूं, घूमने का वक्त हो गया है, चलना होगा। हमने लिखना छोड़ दिया, अकड़कर बैठ गये, कह दिया, नहीं चलते-बस, तू-तू, मैं-मैं का सिलसिला चल पड़ा, पति-पत्नी में लड़ाई हो गयी, घंटों वे एक-दूसरे से नहीं बोले। यह एक छोटे-से कर्म-चक्र का दृष्टांत है। ऐसे चक्र हमारे जीवन में रोज चला करते हैं, परन्तु हम जब चाहें ये कट भी सकते हैं। अगर जब हमें काम छोड़कर घूमने चलने को कहा गया था तब हम चल पड़ते तो यह तू-तू, मैं-मैं का सिलसिला न चलता, अगर शांति से कह देते, अच्छा, दो-चार मिनट में चलता हूं, तब भी मामला आगे न बढ़ता। चक्र को चलने देना, न चलने देना अपने हाथ में था। हर व्यक्ति के जीवन में, हर रोज, मानसिक-आवेगों से, कर्म के ऐसे छोटे-से चक्र बना ही करते हैं, आवेगों में से निकलकर काम करना अपने ही हाथ में होता है, परन्तु हम जरा-जरा सी बात में लड़ा करते हैं, झगड़ा करते हैं, एक-दूसरे से उलझा करते हैं, और कर्म का चक्र लम्बा होते-होते कभी-कभी बहुत बड़ा हो जाता है। पिछले दिनों अखबारों में पढ़ा कि दो आने के लेन-देन पर खून हो गया। एक मोची से किसी ने जूता ठीक कराया। मोची ने चार आने की मांगे, देनेवाले ने दो आने दिये। देकर वह चल दिया, मोची ने उसे पकड़ लिया। झगड़ा हो गया, झगड़ा बढ़ते-बढ़ते हाथापाई होने लगी, ग्राहक ने मोची का गला दबोच लिया, मोची ने उसका गला दबोचने की कोशिश की। ग्राहक ने क्रोध के आवेश में चाकू निकाला और मोची के पेट में खोप दिया, वह चिल्लाया और देखते-देखते चल बसा। कितनी छोटी-सी बात थी, कितना भयंकर परिणाम निकला। इस घटना पर बड़े-बड़े विचारक मगजपच्ची कर सकते हैं। हो सकता है, यह सब पिछले जन्म का नाटक इस जन्म में खेला जा रहा हो। इस जन्म का मरने वाला पिछले जन्म का मारनेवाला हो, इस जन्म का मारनेवाला पिछले जन्म का मरने वाला हो। इस जन्म में तो यह दो आने का पहली बार का लेन-देन था, फिर इतनी भयंकर घटना किसी इतने ही भयंकर कारण के बिना कैसे हो गयी? परन्तु फिर प्रश्न होगा, अगर ऐसी भयंकर घटना इस जन्म में पहली बार नहीं हो सकती, तो पिछले जन्म में पहली बार कैसे हुई होगी? अगर यह माना जाय कि पिछले जन्म में हुई होगी, तब तो पीछे-ही-पीछे चलते चले जाना होगा। अगर इससे समस्या हल नहीं होती तब कहीं कोई जन्म तो मानना ही पड़ेगा, जब ऐसी कोई भयंकर घटना इन दोनों के जीवन में पहली बार हुई होगी। अगर पिछले किसी जन्म में पहली बार ऐसी घटना हो सकती है, तो इस जन्म में भी पहली बार हो सकती है। समस्या यह नहीं है कि यह घटना कब हुई, इस जन्म में पहली बार हुई, या पिछले जन्म में पहली बार हुई। यह तो स्पष्ट है कि इस जन्म में, या पिछले किसी जन्म में यह अवश्य पहली बार हुई, और जैसे पहली बार हुई, वैसे इसे पहली बार में समाप्त भी किया जा सकता था। हमारी व्यावहारिक समस्या यह है कि अगर यह घटना कर्मों की पिछली किसी शृंखला की कड़ी है, तो क्या इस शृंखला को किसी समय आगे बढ़ने से रोका जा सकता था, पीछे नहीं रोका गया तो क्या अब रोका जा सकता है, और अगर रोका जा सकता है, तो कैसे? क्या यह चक्र अटल है, अमिट है, हम इसे तोड़ नहीं सकते, या यह टल सकता है! अगर नहीं टल सकता तो हमारा सब कर्म निरर्थक है, टल सकता है, तभी कर्म की सार्थकता है। ये सब गुत्थियां वर्तमान घटना का विश्लेषण करने पर स्वयं खुलने लगती हैं। घटना क्या थी? मोची ने चार आने मांगे, ग्राहक ने दो आने दिये। अगर मोची दो आने लेकर चुप हो जाता, या ग्राहक चार ही आने दे देता, तब मामला आगे कैसे बढ़ता? मोची दो आने लेकर चुप नहीं रहा, ग्राहक चार आने देने पर राजी नहीं हुआ। क्यों? इसलिये कि दोनों अपने आपे को भूल गये, बुद्धि से काम लेने के स्थान में मानसिक-आवेगों से काम लेने लगे। उनके आत्म-तत्त्व पर क्रोध छा गया, लोभ छा गया, पैसे को दांत से पकड़ने की भावना छा गयी। अगर वे दोनों जरा सोच-समझ के काम लेते, तो मामला आगे बढ़ ही नहीं सकता था।

(आर्य संस्कृति के मूलतत्त्व' ग्रंथ से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला–13

शंकर और दयानन्द

–महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती–

विरोचन जब प्रजापति की बात सुनकर आया तो वह भी अपने सौंदर्य पर मस्त हुआ। उसने अपने साथियों से कहा, यह शरीर ही आत्मा है, इसको खिलाओ, पिलाओ, स्नान कराओ, सजाओ, यही आत्मा की पूजा है। जितना इसे प्रसन्न करोगे उतना ही आत्मा सन्तुष्ट होगा। सभी राक्षस ऐसा करने लगे। आज भी राक्षस बुद्धि के लोग यही करते हैं। परन्तु इन्द्र था देवता। उसके मन में देव बुद्धि कार्य कर रही थी। घर लौटते हुए उसने सोचा, प्रजापति ने मुझे यह क्या बता दिया, आत्मा तो अजर और अमर है और यह शरीर बूढ़ा होने वाला, मरने वाला, फिर यह आत्मा कैसे हो सकता है। प्रतीत होता है कि समझने या समझाने में कोई त्रुटि हो गई।

ऐसा सोचते ही वह फिर प्रजापति के पास आया, बोला, यह शरीर तो आत्मा नहीं हो सकता, यह उत्पन्न होता है, बूढ़ा होता है, मरता है, आत्मा कभी मरता नहीं, फिर आत्मा क्या है?

प्रजापति ने कहा तुम बुद्धिमान हो, तुम आत्मा को जानने के अधिकारी हो। विरोचन तो वैसे ही चला गया। तुम्हें बताता हूँ सुनो कि आत्मा क्या है?

परन्तु क्या है आत्मा? किसी व्यक्ति का लड़का या कोई अन्य सम्बन्धी खो जाये तो वह समाचार पत्रों में विज्ञापन देता है, उसका स्वरूप बताता है। मैं आज आत्मा का स्वरूप बताता हूँ। आप उसे खोजिये। महाराज जनक एक दिन महर्षि याज्ञवल्क्य के पास गये, पूछा महाराज! मनुष्य ज्योति कहां से पाता है? ऋषि ने कहा यह तो बच्चों जैसा प्रश्न है, मनुष्य को सूर्य से प्रकाश मिलता है। जनक ने पूछा जब सूर्य न हो तब? याज्ञवल्क्य बोले तब चन्द्रमा से मिलता है। जनक ने पूछा और चन्द्रमा न हो, अमावस की रात्रि हो, तब कहां से मिलता है? याज्ञवल्क्य ने कहा तब गैस के हण्डे से, बिजली से, आग से, दीपकों से मिलता है। जनक ने कहा, जब इनमें से कोई भी चीज न हो, जब घटाटोप अन्धेरा छा गया हो, वन में खड़ा व्यक्ति कहे, कोई है? मुझे मार्ग बताओ और परे खड़ा कोई दूसरा कहे, जिधर से आवाज आती है उधर आ जाओ। और वह व्यक्ति चल पड़े तब उसे कहाँ से प्रकाश मिलता है? याज्ञवल्क्य बोले, तब वाणी से प्रकाश मिलता है। जनक ने पूछा, जब वाणी भी न रहे, जब घोर विशाल वन में, घटाटोप अंधरे में मनुष्य स्वयं ही आगे बढ़े, तब उसे प्रकाश कहां से मिलता है? याज्ञवल्क्य बोले तब यह आत्मा से ज्योति पाता है। जनक ने पूछा आत्मा क्या है? याज्ञवल्क्य बोले, राजन्! यह जो हृदय के अन्दर ज्ञानवान रहता है, यह जो इन्द्रियों से ढका हुआ ज्योति वाला है वही आत्मा है।

वह है आत्मा और यह रहता कहां है इस सम्बन्ध में वेदान्त दर्शन में श्री शंकर कहते हैं हृदय की गुहा में दो आत्मा रहते है, एक जीव दूसरा परमात्मा।

याज्ञवल्क्य ने भी यही बात कही। यह जो हृदय के अन्दर ज्ञानवान रहता है, इन्द्रियों से ढका हुआ ज्योति वाला, वही आत्मा है।

इससे भी अधिक सुन्दर वर्णन वेद में आया है, उसका अर्थ है-

'ऐ संसार के लोगों! जिसने संसार को बनाया वह तुम्हारे अन्दर रहता है तुम से अलग परन्तु तुम उसे जानते नहीं, क्योंकि (अज्ञान) की धुन्ध में तुम ढके हो, केवल व्यर्थ झगड़ते हो इन्द्रियों के ही पोषक बने हो और केवल मौखिक भजन करते हो।'

संसार के दीखने वाले पदार्थों को ही शान्ति का साधन समझना व्यर्थ के तर्क में पड़े रहना और केवल इन्द्रियों को ही तृप्त करने के लिये सारी आयु को नष्ट कर देना आज के और प्राचीन काल के लोगों में इतना ही अन्तर है कि पहले लोग इन्द्र की पूजा करते थे, और आजकल के लोग इन्द्रियों की पूजा में लगे हैं। वे इन्द्र भगवान को प्रसन्न करते थे और आजकल के लोग इन्द्रियों को तृप्त करने के लिये अनेक दुःख एकत्रित कर लेते हैं। भजन भी करते हैं परन्तु वह भजन जिस्वा से नीचे नहीं उतरता। ऐसी अवस्था में आत्मा जो तुम्हारे अन्दर ही बैठा है, उसे देखा नहीं जा सकता, पाया नहीं जा सकता। हाँ वह स्पष्ट दिखाई देगा कब जब अज्ञान का कोहरा दूर होगा। अब तो समय हो गया, शेष कल।

।।ओ३म् शम्।।

छटा और सातवाँ दिन

प्यारी माताओं तथा सज्जनों!

कल एक वेदमंत्र का अर्थ बता रहा था मैं। वेद कहता है-

'ऐ संसार के लोगों सुनो! जिस परमात्मा ने सारे संसार को रचा वह तुम्हारे अन्दर है, तुमसे पृथक होकर बैठा है, अज्ञान के कोहरे ने उसे छुपा रक्खा है, अविद्या ने तुम्हारी बुद्धि को मलिन कर दिया है, उसे तुम देख नहीं पाते, केवल तर्क के जाल में फंसे रहते हो। तुम केवल प्राणों का पोषण करते हो, केवल बातें बनाते हो, इसीलिए तुम उसे देख नहीं पाते।'

जो लोग प्राणों की ही पालना करते रहते हैं वे उन्हें असुतृपा कहता है उनकी निन्दा करता है। परन्तु प्राणों की पालना तो सभी करते हैं, बड़े से बड़े योगी और महात्मा भी कुछ खाये बिना नहीं रहते। जो रोटी और चावल नहीं खाते वे फल खाते हैं। जो फल नहीं खाते वे जल और वायु के आधार पर जीवन निर्वाह करते हैं पानी और वायु भी तो अन्न हैं, उनके बिना कौन रहता है? साढ़े दस हजार फुट की ऊंचाई पर गंगोत्री में पांच छः महात्मा ऐसे हैं जो सर्दी गर्मी प्रत्येक ऋतु में वहीं पड़े रहते हैं। उन्हीं में एक बारह मास गंगोत्री में रहने वाले महात्मा हैं। कपड़ा भी नहीं पहनते। बर्फ पड़े या वर्षा हो नंग धड़ंग घूमते हैं। वैसे ही बैठ जाते हैं। तीन चार वर्ष पूर्व जब मैं वहां था तो अमेरिका के एक नवयुवक और उनकी पत्नी दोनों वहां आये। मुझसे बोले, 'हमें गंगोत्री में रहने वाले महात्माओं के दर्शन करा दो, हम अंग्रेजी के अतिरिक्त दूसरी भाषा नहीं जानते।' मैं उनके साथ गया, उस दिन वर्षा हो चुकी थी। बर्फ के समान शीतल वायु चल रही थी। अमेरिकन नवयुवक की धर्मपत्नी ने कितने ही गर्म वस्त्र धारण किये हुए थे-जुराबें, स्वेटर, दस्ताने, गर्मकोट उसके ऊपर एक और कोट। जब हम स्वामी रामानन्द जी के पास पहुंचे तो वे नियमानुसार गंगा के किनारे नंग धड़ंग बैठे थे। अमेरिकन देवी ने उन्हें देखा तो मुझसे बोली, 'इन्हें

क्या सर्दी नहीं लगती?' मैंने स्वामी रामानन्द जी को उनकी बात बताई, रामानन्द ने एक बार मुस्कराकर हमारी ओर देखा, फिर शीघ्रता से भस्त्रा प्राणायाम करके अपने अंगूठे से अपने घुटने को दबा दिया, दबाने की देर थी कि सिर से पैर तक पसीना बहने लगा, जैसे वे साढ़े दस हजार फुट की ऊँचाई पर बर्फ वाली गंगा के किनारे बर्फ के समान शीतल वायु में न बैठे हों अपितु किसी अत्यन्त गर्म स्थान पर विराजमान हों, गर्मी के कारण पसीना ही पसीना हुए जाते हों। मुस्करा कर उन्होंने फिर हमारी ओर देखा, हाथ के संकेत से पूछा, 'सर्दी कहां है?' वास्तव में उनके लिये सर्दी और गर्मी का कोई अस्तित्व नहीं। महान् योगी हैं वे, परन्तु अन्न तो वे भी खाते हैं, प्राण की पालना भी करते हैं, फिर वेद ने प्राण को पालने की निन्दा क्यों की, इस बात को समझना चाहिये।

वास्तविकता यह है कि प्राण को पालना या शरीर को अन्न देना बुरा नहीं। यह शरीर तो भगवान् का मंदिर है, जो लोग इसे जीवित रखने के लिये खाते हैं वेद उन्हें असुतृषा नहीं कहता। वह असुतृषा कहता है उन लोगों को जो जीने के लिये नहीं खाते, खाने के लिये जीते हैं। भोजन का साधारण सा नियम यह है कि इतना खाओ जिससे जीवन बना रहे, कार्य कर सको, यह नहीं कि कार्य भूलकर बस खाते ही रहो। फारसी का एक शेर है-

खुर्दन बराये जीस्तन न जिकर करदन अस्त।
तो दानी कि जीस्तन बराये खुर्दन अस्त।।

अर्थात् भोजन करना चाहिये इसलिये कि जी सको और प्रभु को याद कर सको, परन्तु तुम समझ बैठे हो कि जीना केवल खाने के लिए है। और आजकल देखिये क्या यही दशा नहीं। प्रातः उठो तो खाट पर ही 'बैड टी' फिर 'अरली टी' फिर केवल 'टी' तब आफिस में 'लंच टी' सायंकाल 'आफिस टी', रात्रि को 'नाइट टी'। प्रातः से सायं तक टी पी, टी पी, टी पीओ जी, यही समाप्त नहीं होता। पार्टी भी होती है तो टी पार्टी। कोई यह नहीं सोचता कि दूध पार्टी मक्खन पार्टी या घी पार्टी कर दे। विचित्र दृश्य हमने बना रखा है। प्रातः से सायं तक एक ही चिन्ता--क्या खायं, और यह निर्णय हो जाये कि क्या खायें तो फिर यह चिन्ता कि कहां से लायें।

जीवन का विचित्र नुसखा हमने खोज रखा है, पहले खाओ, फिर कमाओ, इतना खाओ कि डाक्टर के पास जाना पड़े, इतना कमाओ कि रोगी हो जाओ फिर मर जाओ।

इस प्रकार तो ईश्वर के दर्शन नहीं होते और उनको भी नहीं जो केवल दिखावे के लिए भक्त बनते हैं, केवल जिह्वा से नाम का जाप करते हैं। नाम जपने से मन का मैल अवश्य दूर होता है, परन्तु केवल उसी समय जप नाम का साबुन मन के कपड़े तक पहुँचे। आप मन को रक्खे एक ओर और साबुन को दूसरी ओर तो मलें फिर यह मैल कभी दूर होगा नहीं।

('शंकर और दयानन्द' से, क्रमशः)

काव्यायन : कालजयी काव्य

अमर कवि प्रदीप की अमर रचना : ऋषिगाथा

आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं! हम कथा सुनाते हैं!!

कवि प्रदीप

हम आज एक ऋषिराज की पावन कथा सुनाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।
हम एक अमर इतिहास के कुछ पन्ने पलटाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

ऋषिवर को लाख प्रणाम, गुरुवर को लाख प्रणाम।
धर्मधुरन्धर, मुनिवर को कोटि-कोटि प्रणाम।

भारत के प्रान्त गुजरात में एक ग्राम है टंकारा।
उस गाँव के ब्राह्मण कुल में जन्मा इक बालक प्यारा।
बालक के पिता थे करसन जी माँ थी अमृतबाई।
उस दम्पति से हम सबने इक अनमोल निधि पाई।
हम टंकारा की पुण्यभूमि को शीश झुकाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

फिर नामकरण की विधि हुई इक दिन कर्सनजी के घर।
अमृत बा का प्यारा बेटा बन गया मूल शंकर।
पाँचवें बरस में स्वयं पिता ने अक्षरज्ञान दिया।
आठवें बरस में कुलगुरु ने उपवीत प्रदान किया।
इस तरह मूलजी जीवनपथ पर चरण बढ़ाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

जब लगा चौदहवाँ साल तो इक दिन शिवरात्रि आई।
उस रात की घटना से कुमार की बुद्धि चकराई।
जिस घड़ी चढ़े शिव के सिर पर चूहे चोरी-चोरी।
मूलजी ने समझी तुरत मूर्तिपूजा की कमजोरी।
हर महापुरुष के लक्षण बचपन में दिख जाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

फिर एक दिन माँ से पुत्र बोला माँ दुनिया है फानी।
मैं मुक्ति खोजने जाऊँगा पानी है ये जिन्दगानी।
चुपचाप सुन रहे थे बेटे की बात पिता ज्ञानी।
जल्दी से उन्होंने उसका ब्याह कर देने की ठानी।
इस भाँति ब्याह की तैयारी करसन जी कराते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

शादी की बात को सुनके युवक में क्रान्तिभाव ज़ागे।
वो गुपचुप एक सुनसान रात में घर से निकल भागे।
तेजी से मूलजी में आये कुछ परिवर्तन भारी।
दीक्षा लेकर वो बने शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी।
हम कभी-कभी भगवान की लीला समझ न पाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

फिर जगह-जगह पर घूम युवक ने योगाभ्यास किया।
कुछ काल बाद पूर्णानन्द ने उनको संन्यास दिया।
जिस दिवस शुद्ध चैतन्य यहाँ संन्यासी पद पाए।
वो स्वामी दयानन्द सरस्वती उस दिन से कहलाए।
हम जगप्रसिद्ध इस नाम पे अपना हृदय लुटाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

संन्यास बाद स्वामी जी ने की घोर तपश्चर्या।
सच्चे सद्गुरु की तलाश यही थी उनकी दिनचर्या।
गुजरात से पहुँचे विन्ध्याचल फिर काटा पन्थ बड़ा।
फिर पार करके हरिद्वार हिमालय का रस्ता पकड़ा।
अब स्वामीजी के सफर की हम कुछ झलक दिखाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

तीर्थों में गए मेलों में गए वो गए पहाड़ों में।
जंगल में गए झाड़ी में गए वो गए अखाड़ों में।
हर एक तपोवन तपस्थलि में योगीराज ठहरे।
पर हर मुकाम पर मिले उन्हें कुछ भेद भरे चेहरे।
साधू से मिले सन्तों से मिले वृद्धों से मिले स्वामी।
जोगी से मिले यतियों से मिले सिद्धों से मिले स्वामी।
त्यागी से मिले तपसी से मिले वो मिले अक्खड़ों से।
ज्ञानी से मिले ध्यानी से मिले वो मिले फक्कड़ों से।
पर कोई जादू कर न सका मन पर स्वामी जी के।
सब ऊँची दूकानों के उन्हें पकवान लगे फीके।
योगी का कलेजा टूट गया वो बहुत हताश हुए।
कोई सद्गुरु न मिला इससे वो बहुत निराश हुए।
आँखों से छलकते आँसू स्वामी रोक न पाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

इतने में अचानक अन्धकार में प्रकटा उजियारा।
प्रज्ञाचक्षु का पता मिला इक वृद्ध सन्त द्वारा।
मथुरा में रहते थे एक सद्गुरु विरजानन्द नामी।
उनसे मिलने तत्काल चल पड़े दयानन्द स्वामी।
आखिर इक दिन मथुरा पहुँचे तेजस्वी संन्यासी।
गुरु के दर्शन से निहाल हुई उनकी आँखें प्यासी।
गुरु के अन्तर्चक्षु ने पात्र को झट पहचान लिया।
उसकी प्रतिभा को पहले ही परिचय में जान लिया।
सद्गुरु की अनुमति मांग दयानन्द उनके शिष्य बने।
आगे चलकर के यही शिष्य भारत के भविष्य बने।
गुरु आश्रम में स्वामी जी ने जमकर अभ्यास किया।
हर विद्या में पारंगत बन आत्मा का विकास किया।
जो कर्मठ होते हैं वो मंजिल पा ही जाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

गुरुकृपा से एक दिन योगिराज वामन से विराट बने।
वो पूर्ण ज्ञान की दुनियाँ के अनुपम सम्राट बने।
सब छात्रों में थे अपने दयानन्द बड़े बुद्धिशाली।
सारी शिक्षा बस तीन वर्ष में पूरी कर डाली।
जब शिक्षा पूर्ण हुई तो गुरुदक्षिणा के क्षण आए।
मुट्ठीभर लौंग स्वामी जी गुरु की भेंट हेतु लाए।
जो लौंग दयानन्द लाए थे श्रद्धा से चाव से।
वो लौंग लिए गुरुजी ने बड़े ही उदास भाव से।
स्वामी ने गुरु से विदा माँगी जब आई विदा घड़ी।
तब अन्ध गुरु की आँख में गंगा-यमुना उमड़ पड़ी।
वो दृश्य देखकर हुई बड़ी स्वामी को हैरानी।
पर इतने में ही मुख से गुरु के निकल पड़ी वाणी।
जो वाणी गुरुमुख से निकली वो हम दोहराते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

गुरु बोले सुनो दयानन्द मैं निज हृदय खोलता हूँ।
जिस बात ने मुझे रुलाया है वो बात बोलता हूँ।
इन दिनों बड़ी दयनीय दशा है अपने भारत की।
हिल गई हैं सारी बुनियादें इस भव्य इमारत की।
पिस रही है जनता पाखण्डों की भीषण चक्की में।
आपस की फूट बनी है बाधा अपनी तरक्की में।
है कुरीतियों की कारा में सारा समाज बन्दी।
संस्कृति के रक्षक बने हैं भक्षक हुए हैं स्वच्छन्दी।
कर दिया है गन्दा धर्म सरोवार मोटे मगरों ने।
जर्जरित जाति को जकड़ा है बदमाश अजगरों ने।
भक्ति है फंसी मक्कारों के मजबूत शिकंजों में।
आर्यों की सभ्यता रोती है पापियों के पंजों में।
गुरु की वाणी सुन स्वामी व्याकुल हो जाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।

गुरु फिर बोले ईश्वर बिकता अब खुले बजारों में।
आया है भयंकर परिवर्तन आचार-विचारों में।
हर चबूतरे पर बैठी है बन-ठन कर चालाकी।
उस ठगनी ने है सबको ठगा कोई न बचा बाकी।
बीमार है सारा देश चल रही है प्रतिकूल हवा।
दिखता नहीं कोई ऐसा जो इसकी करे दवा।
हे दयानन्द इस दुःखी देश का तुम उद्धार करो।
मँझधार में है बेड़ा बेटा तुम बेड़ा पार करो।

एक अन्ध गुरु की यही है इच्छा इसपर ध्यान धरो।
भारत के लिए तुम अपना सारा जीवन दान करो।
संकट में है अपनी जन्मभूमि तुम जाओ करो रक्षा।
जाओ बेटे भारत के भाग्य का तुम बदलो नक्शा।
स्वामी जी गुरु की चरणधूल माथे पे लगाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

गुरु की आज्ञा अनुसार इस तरह अपने ब्रह्मचारी।
करने को देश उद्धार चल पड़े बनके क्रान्तिकारी।
करदिया शुरू स्वामीजी ने एक धुँआधार दौरा।
हर नगर-गाँव के सभी कुम्भकर्णों को झकझोरा।

दिन-रात ऋषि ने घूम-घूम कर अपना वतन देखा।
जब अपना वतन देखा तो हरतरफ घोर पतन देखा।
मदिरों पे कब्जा कर लिया था मिट्टी के खिलौनों ने।
बदनाम किया था भक्ति को बदनीयत सोनों ने।

रमणियाँ उतारा करती थी आरती महन्तों की।
वो दृश्य देखती रहती थी टोली श्रीमन्तो की।
छिप-छिप कर लम्पट करते थे परदे में प्रेमलीला।
सारे समाज के जीवन का ढाँचा था हुआ ढीला।
यह देश ऋषि सम्पूर्ण क्रान्ति का बिगुल बजाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

क्रान्ति का करके ऐलान ऋषि मैदान में कूद पड़े।
उनके तेवर को देख हो गए सबके कान खड़े।
इक हाथ में था झंडा उनके इक हाथ में थी लाठी।
वो चले बनाने हर हिन्दू को फिर से वेदपाठी।

हरिद्वार में कुम्भ का मेला था ऐसा अवसर पाकर।
पाखण्ड खण्डनी ध्वजा गाड़ दी ऋषि ने वहाँ जाकर।
फिर लगे घुमाने संन्यासी जी खण्डन का खाण्डा।
कितने ही गुप्त बातों का उन्होंने फोड़ दिया भाण्डा।

धज्जियाँ उड़ा दी स्वामी ने सब झूठे ग्रन्थों की।
बखिया उधेड़ कर रख दी सारे मिथ्या पन्थों की।
ऋषिवर ने तर्क तराजू पर सब धर्मग्रन्थ तोले।
वेदों की तुलना में निकले वो सभी ग्रन्थ पोले।
वेदों की महत्ता स्वामी जी सबको समझाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

चलती थी हुकूमत हर तीरथ में लोभी पण्डों की।
स्वामी ने पोल खोली उनके सारे हथकण्डों की।
आए करने ऋषि का विरोध गुण्डे हट्टे-कट्टे।
पर अपने वज्रपुरुष ने कर दिए उनके दाँत खट्टे।

दुर्दशा देश की देख ऋषि को होती थी ग्लानि।
पुरखों की इज्जत पर फेरा था लुच्चों ने पानी।
बन गए थे देश के देवालय लालच की दूकानें।
मन्दिरों में राम के बैठी थीं रावण की सन्तानें।

स्वामी ने हर भ्रष्टाचारी का पर्दाफाश किया।
दम्भियों पे करके प्रहार हरेक पाखण्ड का नाश किया।
लाखों हिन्दू संगठित हुए वैदिक झंडे के तले।
जलनेवाले कुछ द्वेषी इस घटना से बहुत जले।
इस तरह देश में परिवर्तन स्वामी जी लाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

कुछकाल बाद स्वामी ने काशी जाने की ठानी।
उस कर्मकाण्ड की नगरी पर अपनी भृकुटी तानी।
जब भरी सभा में स्वामी की आवाज बुलन्द हुई।
तब दंग हो गए लोग बोलती सबकी बन्द हुई।

वेदों में मूर्तिपूजा है कहाँ स्वामी ने सवाल किया।
उस विकट प्रश्न ने सभी दिग्गजों को बेहाल किया।
काशीवालों ने बहुत सिर फोड़ा की माथापच्ची।
पर अन्त में निकली दयानन्द जी की ही बात सच्ची।

मच गया तहलका अभिमानी धर्माधिकारियों में।
भारी भगदड़ मच गई सभी पंडित-पुजारियों में।
इतिहास बताता है उस दिन काशी की हार हुई।
हर एक दिशा में ऋषिराजा की जय-जयकार हुई।
अब हम कुछ और करिश्मे स्वामी के बतलाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

उन दिनों बोलती थी घर-घर में मरदों की तूती।
हर पुरुष समझता था औरत को पैरों की जूती।
ऋषि ने जुल्मों से छुड़वाया अबला बेचारी को।
जगदम्बा के सिंहासन पर बैठा दिया नारी को।

बदकिस्मत बेवाओं के भाग भी उन्होंने चमकाए।
उनके हित नाना नारी निकेतन आश्रम खुलवाए।
स्वामी जी देख सके ना विधवाओं की करुण व्यथा।
करवा दी शुरू तुरन्त उन्होंने पुनर्विवाह प्रथा।

होता था धर्म परिवर्तन भारत में खुल्लम-खुल्ला।
जनता को नित्य भरमाते थे पादरी और मुल्ला।
स्वामी ने उन्हें जब कसकर मारा शुद्धि का चाँटा।
सारे प्रपंचियों की दुनियां में छा गया सन्नाटा।
फिर भक्तों के आग्रह से महर्षि बम्बई जाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

भारत के सब नगरों में नगर बम्बई था भाग्यशाली।
ऋषि जी ने पहले आर्य समाज की नींव यहीं डाली।
फिर उसी वर्ष स्वामी से हमें सत्यार्थ प्रकाश मिला।
मन पंछी को उड़ने के लिए नूतन आकाश मिला।

सदियों से दूर खड़े थे जो अपने अछूत भाई।
ऋषि ने उनके सिर पर इज्जत की पगड़ी बँधवाई।
जो तंग आ चुके थे अपमानित जीवन जीने से।
उन सब दलितों को लगा लिया स्वामी ने सीने से।

बम्बई के बाद इक रोज ऋषि पंजाब में जा निकले।
उनके चरणों के पीछे-पीछे लाखों चरण चले।
लाखों लोगों ने मान लिया स्वामी को अपना गुरू।
सत्संग कथा कीर्तन प्रवचन घर-घर हो गए शुरू।
स्वामी का जादू देख विरोधी भी चकराते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

पंजाब के बाद राजपूताना पहुँचे नरबंका।
देखते-देखते बजा वहाँ भी वेदों का डंका।
अगणित जिज्ञासु आने लगे स्वामी की सभाओं में।
मच गई धूम वैदिक मन्त्रों की दसो दिशाओं में।

सब भेदभाव की दीवारों को चकनाचूर किया।
सदियों का कूड़-करकट स्वामीजी ने दूर किया।
ऋषि ने उपदेश से लाखों की तकदीर बदल डाली।
जो बिगड़ी थी वर्षों से वो तसवीर बदल डाली।

फिर वीरभूमि मेवाड़ में पहुँचे अपने ऋषि ज्ञानी।
खुद उदयपुर के राणा ने की उनकी अगवानी।
राणा ने उनको देनी चाही एकलिंग जी की गादी।
पर वो महन्त की गादी ऋषि ने सविनय ठुकरा दी।
इतने में जोधपुर का आमन्त्रण स्वामी पाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

उन दिनों जोधपुर के शासन की बड़ी थी बदनामी।
भक्तों ने रोका फिर भी बेधड़क पहुँच गए स्वामी।
जसवतसिंह के उस राज में था दुष्टों का बोलबाला।
राजा था विलासी इस कारण हर तरफ था घोटाला।

एक नीच तवायफ बनी थी राजा के मन की रानी।
थी बड़ी चुलबुली वो चुड़ैल करती थी मनमानी।
स्वामी ने राजा को सुधारने के किए अनेक जतन।
पर बिलकुल नहीं बदल पाया राजा का चाल-चलन।

कुलटा की पालकी को इक दिन राजा ने दिया कन्धा।
स्वामी को भारी दुःख हुआ वो दृश्य देख गन्दा।
स्वामी जी बोले हे राजन् तुम ये क्या करते हो।
तुम शेर पुत्र होकर के इक कुतिया पर मरते हो।
स्वामी जी घोर गर्जन से सारा महल गुँजाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

राजा ने तुरत माफी माँगी होकर के शर्मिन्दा।
पर आग-बबूला हो गई वेश्या सह न सकी निन्दा।
षडयन्त्र रचा ऋषि के विरुद्ध कुलटा पिशाचिनी ने।
जहरीला जाल बिछाया उस विकराल साँपिनी ने।

वेश्या ने ऋषि के रसोइये पर दौलत बरसा दी।
पाकर सम्पदा अपार वो पापी बन गया अपराधी।
सेवक ने रात के दूध में गुप-चुप सखिया मिला दिया।
फिर काँच का चूरा डाल ऋषिराजा को पिला दिया।

वो ले ऋषि ने पी लिया दूध वो मधुर स्वाद वाला।
पर फौरन स्वामी भाँप गए कुछ दाल में है काला।
अपने सेवक को तुरन्त ही बुलवाया स्वामी ने।
खुद उसके मुख से सकल भेद खुलवाया स्वामी ने।
पश्चातापी को महामना नेपाल भगाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

आए डाक्टर आए हकीम और वैद्यराज आए।
पर दवा किसी की नहीं लगी सब के सब घबराए।
तब रुग्ण ऋषि को जोधपुर से ले जाया गया आबू।
पर वहाँ भी उनके रोग पे कोई पा न सका काबू।

आबू के बाद अजमेर उन्हें भक्तो ने पहुँचाया।
कुछ ही दिन में ऋषि समझ गए अब अन्तकाल आया।
वे बोले हे प्रभू तूने मेरे संग खूब खेल खेला।
तेरी इच्छा से मैं समेटता हूँ जीवन मेला।

बस एक यही विनती है मेरी हे अन्तर्यामी।
मेरे बच्चों को तू सँभालना जगपालक स्वामी।
जब अन्त घड़ी आई तो ऋषि ने ओम् शब्द बोला।
फिर चुपके से धर दिया धरा पर नाशवान चोला।
इस तरह ऋषि तन का पिंजरा खाली कर जाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

संसार के आर्यों सुनो हमारा गीत है इक गागर।
इस गागर में हम कैसे भरें ऋषि महिमा का सागर।
स्वामी जी क्या थे कैसे थे हम ये न बता सकते।
उनकी गुण गरिमा अल्प समय में हम नहीं गा सकते।

सच पूछो तो भगवान का इक वरदान थे स्वामी जी।
हर दशकन्धर के लिए राम का बाण थे स्वामी जी।
प्रतिभा के धनी एक जबरदस्त इन्सान थे स्वामी जी।
हिन्दी हिन्दू और हिन्दुस्तान के प्राण थे स्वामी जी।

क्या बर्मा क्या मॉरिशस क्या सूरिनाम क्या फीजी।
इन सब देशों में विद्यमान हैं आज भी स्वामी जी।
केनिया गुआना त्रिनिदाद सिंगापुर युगण्डा।
उड़ रहा सब जगह बड़ी शान से आर्यों का झंडा।
हर आर्य समाज में आज भी स्वामी जी मुस्काते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।
हम कथा सुनाते हैं।

टाण्डा बना आर्यों का महातीर्थ

आर्य समाज टाण्डा के 130वें वार्षिकोत्सव पर सम्पन्न हुए भव्य कार्यक्रम

आर्य समाज टाण्डा, अम्बेडकरनगर का चार दिवसीय १३०वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक ६,१०,११ व १२ नवम्बर २०२१ को डी.ए.वी.एकेडमी के विशाल प्रांगण में बड़े धूमधाम के साथ समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। आर्य जगत के सुप्रसिद्ध संन्यासियों, प्रख्यात विद्वानों, भजनोपदेशकों की उपस्थिति ने टाण्डा को आर्यों का महातीर्थ बना दिया।

चार दिनों तक निरंतर चले इस वार्षिकोत्सव में नित्य प्रति वैदिक यज्ञ, भजनोपदेश और आध्यात्मिक प्रवचन से ज्ञान, भक्ति और कर्म की अजस्र धारा प्रवाहित हुई। उत्सव का शुभारम्भ ६ नवम्बर २०२१ को गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद (उ.प्र.) की प्राचार्या डॉ.प्रियंवदा वेदभारती जी के ब्रह्मत्व व उनके गुरुकुल की दो ब्रह्मचारिणी सुश्री प्राची और सुश्री माद्री के वेदपाठ से हुआ। इस अवसर पर यजमान के रूप में न्यायमूर्ति श्रीयुत सज्जन सिंह कोठारी (पूर्व लोकायुक्त, राजस्थान) सपत्नीक शोभायमान रहे। शुभारम्भ के इस अवसर पर श्रद्धेय स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। अपराह्न १ बजे बाबू मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज, डी.ए.वी.एकेडमी व आर्य कन्या महाविद्यालय के हजारों छात्र/छात्राओं के साथ उत्सव में पधारे आर्य संन्यासियों, विद्वानों, भजनोपदेशकों व जनपद तथा आसपास की दर्जनों आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं सदस्यों के नेतृत्व में विशाल शोभा यात्रा निकाली गई।

मुस्लिम वेलफेयर सोसाइटी ने किया शोभायात्रा का स्वागत

इण्डियन मुस्लिम वेलफेयर सोसाइटी ने आर्य समाज की शोभायात्रा का भव्य स्वागत किया और आपसी एकता का संदेश दिया। इस दौरान शोभायात्रा में चल रहे अतिथियों का सोसाइटी द्वारा अंगवस्त्र एवं अन्य वस्तुएं भेंट कर लोगों को सम्मानित किया। स्वामी अग्निवेश जी महाराज ने इंडियन मुस्लिम वेलफेयर सोसाइटी का धन्यवाद किया एवं बुनकर नगरी टाण्डा में हिन्दू मुस्लिम एकता को देखते हुए प्रसन्नता व्यक्त की और ऐसे ही एकता बनाये रखने की अपील की। इस स्वागत में सोसाइटी के अध्यक्ष सिराज फाजिल, उपाध्यक्ष फिरोज खान तथा अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

प्रत्येक दिन अलग-अलग सत्रों में विभिन्न कार्यक्रमों के रूप में क्रमशः 'भारत विश्वगुरु की ओर-आर्य समाज की भूमिका', अध्यक्षता-स्वामी आर्यवेश जी; 'नारी सशक्तीकरण' (वेदों में नारी) अध्यक्षता-श्रीमती अनीता कोठारी, पत्नी न्यायमूर्ति श्री सज्जनसिंह कोठारी, मुख्य अतिथि रेखा मिश्रा पत्नी डॉ.परमेश्वर नाथ मिश्र, अधिवक्ता सर्वोच्च न्यायालय, संयोजिका डॉ.प्रशिषा मिश्रा; 'शंका समाधान' अध्यक्षता-डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री, समाधानकर्ता-श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय; के अतिरिक्त 'वेद सम्मेलन' एवं 'आर्य युवा सम्मेलन' का भी आयोजन किया गया।

प्रतिदिन महायज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी के आध्यात्मिक व्याख्यान व श्री कैलाश कर्मठ, श्री सत्यपाल सरल, श्री केशवदेव आर्य के भजनों का कार्यक्रम चलता रहा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज टाण्डा तथा मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज एवं डी.ए.वी.एकेडमी पूरे आर्य जगत में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। यहाँ की विशेषता यह है कि आधे से अधिक छात्र-छात्राओं की संख्या मुस्लिम समुदाय से सम्बन्धित है। पिछले कई दशकों से यह शिक्षण संस्थाएं सामाजिक एवं साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए जिस संकल्प के साथ कार्य कर रही हैं, ऐसा उदाहरण अन्यत्र देखने को नहीं मिलता।

८ नवम्बर जिनका जन्म दिवस है

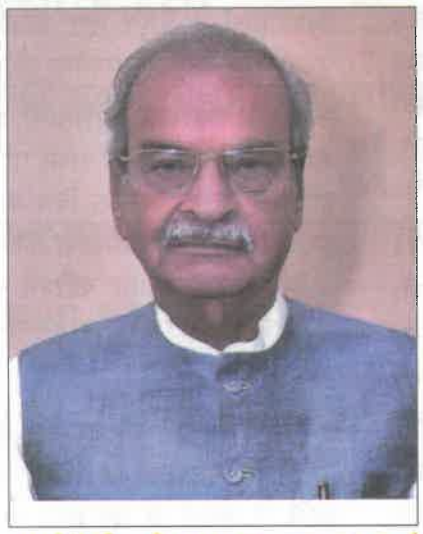

कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य
प्रधान, आर्य समाज, टाण्डा, उ.प्र.

पद्म सम्मान योग्य श्री आनन्द कुमार आर्य

शिक्षा, संस्कृति, सामाजिक चेतना एवं नारी जागृति के क्षेत्रों में कुछ अलग कर दिखाने वाले व्यक्तियों की जब गणना होती है, तब जो उँगलियों पर गिने जाने वाले नाम उभर कर आते हैं; उनमें सर्वाधिक संगत, सार्थक एवं प्रासंगिक नाम है- कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य।

काल के पृष्ठों पर अपने हस्ताक्षर अंकित करने वाले महान् स्वतंत्रता-सेनानी, त्यागमूर्ति श्री मिश्रीलाल आर्य एवं पुण्यशीला माता श्रीमती रामप्यारी देवी के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में 8 नवम्बर 1936 को जन्म लेने वाले बालक 'आनन्द' ने बाल्यकाल से ही अपनी प्रतिभा एवं व्यवहार से जनमन को आनंदित करना शुरु कर दिया था। लखनऊ विश्वविद्यालय से उच्च श्रेणी में स्नातक उपाधि अर्जित करने के उपरान्त- पिता के आदेश से कोलकाता में विस्तीर्ण अपने परम्परागत व्यवसाय का कार्यभार सँभालने चले गये तथा स्वल्प अवधि में ही उसे व्यवस्थित करते हुए अपनी सुलझी हुई कार्यशैली का परिचय देकर सभी को अभिभूत कर दिया। कोलकाता-प्रवास के दौरान आनन्द बाबू व्यवसाय के साथ ही- बंगाल आसाम में आर्य समाज की गतिविधियों का संचालन, आर्य शिक्षा संस्थाओं की स्थापना, संरक्षण एवं सेवा सहायता कार्यों द्वारा अहिन्दी भाषी क्षेत्र में भी लोगों के हृदय जीतने में सफल रहे। तत्पश्चात् 1990 में पिता के निर्वाणोपरान्त उनकी अभिलाषा का समादर करते हुए टाण्डा, उ.प्र. चले आये तथा यहाँ आर्य समाज, आर्य कन्या इण्टर कालेज के विकास कार्यों एवं डी.ए.वी.एकेडमी की स्थापना द्वारा अपने तपस्वी पिता को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। इसी अवधि में आनन्द कुमार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के वरिष्ठ उपप्रधान बने तथा कैप्टेन देवरत्न आर्य के दिवंगत होने पर कार्यकारी प्रधान के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका का सजगता पूर्वक निर्वाह किया। अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, महासम्मेलनों, समारोहों के सफलता पूर्वक आयोजन- आनन्द जी की सांगठनिक क्षमता, प्रशासनिक क्षमता तथा व्यावहारिक कार्यशैली की कहानी कह रहे हैं। पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश-टाण्डा तथा राजधानी दिल्ली-तीन केन्द्रों पर एक साथ ही एक ही समय में कार्य करने का कीर्तिमान आनन्द बाबू के नाम से स्वर्णाक्षरों में इतिहास के पन्नों में दर्ज हो चुका है। -सम्पादक

जन्म महोत्सव समारोह

आर्य समाज टाण्डा के १३०वें वार्षिकोत्सव से एक दिन पूर्व दिनांक ८ नवम्बर २०२१ को श्री आनन्द कुमार आर्य का जन्म महोत्सव डी.ए.वी.एकेडमी के प्रांगण में उल्लासपूर्वक मनाया गया। यह समारोह डॉ.प्रशिषा मिश्रा, प्रधानाचार्या, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज, टाण्डा, श्री अशोक कुमार पाण्डेय, प्रिंसिपल, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा तथा डॉ.अरुण आर्य, प्राचार्य, आर्य कन्या महाविद्यालय, टाण्डा के संयोजकत्व में आयोजित हुआ। श्री आनन्द कुमार आर्य 'बाबूजी' अपने जीवन के ८५ वसन्त पूर्ण करके ८६वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं।

दिनांक ८ नवम्बर २०२१ को सायंकाल ६ बजे बृहद् यज्ञ आर्य जगत के विख्यात विद्वानों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ तथा प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

श्रीमती मीना आर्या धर्मार्थ न्यास

आर्य समाज टाण्डा के वर्तमान प्रधान व पूर्व कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली- कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य के पुत्र/पुत्रियों श्री मनीष आर्य, अमिताभ आर्य, श्रीमती मीता जायसवाल व श्रीमती ममता जायसवाल द्वारा अपनी पूज्य माताजी श्रीमती मीना आर्या की स्मृति में गठित 'श्रीमती मीना आर्या धर्मार्थ न्यास' के बहु आयामी उद्देश्यों में प्रतिवर्ष आर्य जगत के विद्वानों का सम्मान करने के निर्णय के आधार पर इस वर्ष स्वर्गीय मीना जी के परिचितों व उनकी जिनमें विशेष आस्था थी, उन उपयुक्त सात विद्वत्जनों का चयन कर उनका सम्मान किया गया। आर्य जगत में विद्वत् सम्मान समारोह की महत्ता को ध्यान में रखकर न्यास ने अत्यंत उच्च स्तरीय रूप में विद्वत् सम्मान समारोह प्रारम्भ किया। कार्यक्रम के अन्त में न्यास के अध्यक्ष श्री आनन्द कुमार आर्य ने सम्मानित होने वाले समस्त विद्वत्जनों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया और आमंत्रित संन्यासियों, आर्य जगत के प्रख्यात विद्वानों व उपदेशकों तथा उपस्थित समस्त जनों के प्रति आभार व्यक्त किया।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निर्देशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-638/181डी,
शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप,
पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अनिल वीर त्रिपाठी
9651333679

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
9956087585

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निशिका वाजपेयी
7310119999

प्रचार प्रमुख
श्री प्रेम चन्द शर्मा
8799521631

नवोन्मेष
श्री कृष्ण जी

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
सक्रिय सदस्य	–	200 रु. वार्षिक
विशिष्ट सदस्य	–	500 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	2,000 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	20,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	75,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-

बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक - आर्य लोक वार्ता
खाता सं.-46900 1000 00651
खाते का प्रकार-बचत खाता

प्रतिष्ठापक
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार

संरक्षक
डॉ.भानु प्रकाश आर्य, लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।